चन्दामामा
माँ - बच्चों का मासिक पत्र

Photo by A. L. Syed

पुरस्कृत परिचयोक्ति

प्यास बुझाओ !

प्रेषक : वामन वि. नाबर, डोंबिवली

कुरमुरा....
ताजा...
स्वादिष्ट...
बढ़िया बिस्कुट
ब्रिटेनिया
BBX 33 HIN

चन्दामामा

वर्ष : ७ अप्रैल १९५६ अंक : ८

विषय - सूची

वार्षिक चन्दा
रु. ४-८-०

एक प्रति
रु. ०-६-०

'कोडक' चित्रों द्वारा यह संगीत आपके कानों में हमेशा

ऐसे में चित्र लीजिए, बहुत सुन्दर आएगा — इतना सुन्दर कि आप उसे हमेशा सँजोकर रखना चाहेंगे। आपके पारिवारिक जीवन में ऐसे-ऐसे बढ़िया मौके अक्सर आते हैं जबकि आप एक से एक सुन्दर 'कोडक' चित्र खींच सकते हैं।

एक 'कोडक' कैमरे से चित्र खींचना बिलकुल आसान है। नौसिखियों के लिए आदर्श कुछ कैमरों में तो पहले से ही सही फ़ोकस पर बैठाये हुए लैंस रहते हैं। आपको बस व्यूफाइन्डर में से लक्ष्य निर्धारित कर बटन दबाने के अलावा और कुछ भी नहीं करना पड़ता।

आपका कोडक विक्रेता आपके लिए उपयुक्त कैमरे के चुनाव में आपकी मदद करेगा। और याद रखिए — यह ज़रूरी नहीं है कि एक अच्छा कैमरा क़ीमती ही हो। आप रु.१७/८ जैसे मामूली दामों में भी एक बढ़िया 'कोडक' कैमरा ख़रीद सकते हैं।

विश्वसनीय 'कोडक' कैमरे से

चित्र हमेशा ही सुन्दर खिंचते हैं!

'चरक' का गुलकंद

(प्रवालयुक्त)

गरमी का कट्टर शत्रु है!

आज ही एक बोतल
खरीदें
तथा
सचित्र सूची-पत्र
मुफ़्त मँगाएं।

चरक भण्डार

४९, ह्यूज़ रोड, बम्बई-७

सूचना

★

एजेन्टों और ग्राहकों से निवेदन है कि मनीआर्डर कूपनों पर पैसे भेजने का उद्देश्य तथा आवश्यक अंकों की संख्या और भाषा संबंधी आदेश अवश्य दें। पता-डाकखाना, ज़िला, आदि साफ़ साफ़ लिखें। ऐसा करने से आप की प्रतियां मार्ग में खोने से बचेंगी।

सर्क्युलेशन मैनेजर

आधुनिक भारतवर्ष के निर्माण के लिए

नौजवानों की बड़ी आवश्यकता है। अगर ऐसी माताओं की भी आवश्यकता हो, जो ऐसे नौजवानों को उत्पन्न कर सके, तो महिलाओं के सेवन के लिये है:

लोध्रा

गर्भाशय के रोगों का नाशक।

केसरी कुटीरम् लिमिटेड
१५ वेस्टकाट रोड, रायपेट,
मद्रास-१४.

केसरि कुटीरम् लि. • मद्रास.14

चन्दामामा

संचालक : चक्रपाणी

हम प्रायः लिखते आये हैं कि बच्चों को अध्ययन के समय अध्ययन करना चाहिये, और मनोरंजन के समय मनोरंजन। ये दोनों बुद्धि और मन के विकास के लिये आवश्यक हैं।

तीसरी एक और चीज है, जो मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में बहुत जरूरी है; वह है स्वास्थ्य। स्वास्थ्य का, आहार और व्यायाम से अविच्छिन्न सम्बन्ध है। नियमित और पौष्टिक आहार, एवं व्यायाम से ही, अच्छा स्वास्थ्य मिलता है। हमेशा यह स्मरण रखना चाहिए कि व्यायाम के बिना, पौष्टिक पदार्थ का भी विशेष लाभ नहीं होता।

अप्रैल १९५६ — वर्ष : ७ — अंक : ८

झूठमूठ की भैंस

किसान एक था किसी गाँव में
जो था बिलकुल निपट गँवार,
एक दिवस बोला बीबी से
"सुन री, मेरा एक विचार!

भैंस दुधारू एक खरीदें
बता, सूझ यह कैसी है?"
बीबी बोली "मैं क्या बोलूँ,
भैंस रहे तो अच्छा ही है।"

सुन बीबी की बात उसी क्षण
कहा किसान ने "अच्छा बोल,

भैंस आयेगी, कहाँ रखेगी,
दूध-दही को तू यह बोल?"

"रखा बड़ा जो मटका घर में
उसमें सारा दूध रखूँगी,
और एक छोटा जो मटका
उसमें केवल दही रखूँगी।"

"बता, करेगी क्या?"-बोला पति-
"अगर दूध ज्यादा बच जाय?"
"तो भेजूँगी उसे मायके
जिससे काम वहाँ भी आय!"

"क्या दे देगी दूध उन्हें तू?"
कह यह उबल पड़ा किसान,

पद्य-कथा

"दूध भैंस का भाई को ही
दे आयी मेरी बीबी यह!"

"झूठमूठ का खेत हमारा
चरती है नित इसकी भैंस,
इसीलिए मैं अभी झगड़ता
निकालता हूँ इसकी धौंस!"

यह कह साला लगा विहँसने,
विहँस लोग भी खिसक गये
समझ गये सब, झगड़ रहे ये
झूठमूठ की भैंस लिये!

और मारने लगा उसी दम
बीबी को वह भैंस समान!

तब भाई के आगे जाकर
बीबी उसकी लगी चीखने,
सारी बातें सुन भाई भी
बहनोई को लगा पीटने।

"झगड़ रहे क्यों?"–लगे पूछने
लोग जमा होकरके सारे,
"रहूँ देखता कैसे मैं, जब
मेरी बहिनी को यह मारे?"

साले की सुन बात सही यह
उस बुद्धू ने कहा झूठ यह–

मुख - चित्र

जुये में हार जाने के बाद, जब पाण्डव बनवास कर रहे थे, तो कर्ण ने दुर्योधन से कहा—"जब पाण्डव जंगलों में कष्ट झेल रहे हैं, तो हमें अपना वैभव उन्हें दिखाना चाहिये। इसलिये हम वन में चरनेवाली गाय-भैंसों को देखने के बहाने वहाँ जायेंगे।"

दुर्योधन, शकुनि, कर्ण, दुश्शासन, अन्तःपुर की स्त्रियाँ, अनगिनत रथ, हाथी, घोड़े, सिपाहियों को लेकर, द्वैत वन में गये, जहाँ पाण्डव रह रहे थे। वहाँ जाकर उन लोगों ने एक झील के किनारे पड़ाव डाला।

झील के परले किनारे पाण्डव थे। उस समय धर्मराज एक यज्ञ शुरू करनेवाला था। दुर्योधन और उसके अनुयायी, जब पड़ाव की तैयारी कर रहे थे तो कुछ गन्धर्वों ने आकर कहा—"हमारा राजा चित्रसेन अपनी पत्नियों के साथ, इस किनारे पर ही पड़ाव डाले हुए हैं। इसलिये आप यहाँ नहीं रह सकते।"

यह सुनते ही दुर्योधन आग बबूला हो उठा। उसने चित्रसेन के सैनिकों की ओर अपने सैनिक भेजे। उन्होंने, अपने राजा से जो कुछ गुज़रा था, कह सुनाया। चित्रसेन तुरत युद्ध के लिए निकल पड़ा। उसने अपने एक सम्मोहनास्त्र से दुर्योधन की सेना को पंगु बना दिया। वे अपने हाथ-पैर न हिला पाते थे। दुर्योधन के हाथ बाँधकर वह ले जाने लगा।

तब दुर्योधन के सैनिकों ने जाकर धर्मराज से विनती की—"महाप्रभु! बचाइये। हमारे राजा दुर्योधन को चित्रसेन पकड़े लिये जा रहे हैं।" भीम और अर्जुन ने कहा—"जो होना था, उसे गन्धर्वों ने ही कर दिखाया।"

परन्तु धर्मराज ने भाइयों से कहा—"यह ग़लत है। हम दोनों की आपसी दुश्मनी में वे सौ हैं, और हम पाँच। मगर दुश्मनी किसी और से हो जाये, तो हम सब १०५ हैं। इसलिये तुम तुरन्त जाकर दुर्योधन को छुड़ाओ।"

भीम और अर्जुन ने चित्रसेन से युद्ध कर, दुर्योधन को छुड़वाया। "कभी ऐसी भूल न करना"—धर्मराज ने दुर्योधन को समझाया।

गुरु का कर्तव्य

काशी के राजा ब्रह्मदत्त के जमाने में, बोधिसत्व तक्षशिला में एक प्रसिद्ध शिल्पाचार्य के रूप में पैदा हुए। उनके पास मूर्तिकला, व अन्य कलाओं का अभ्यास करने देश के चारों कोनों से अनेक विद्यार्थी आया करते थे।

तक्षशिला के शिल्पाचार्य की कीर्ति सुनकर काशी के राजा ने, अपने लड़के को उनके पास विद्याभ्यास करने के लिए भेजने का निश्चय किया।

राज कुमार अभी पूरा सोलह वर्ष का भी न था। उसका अकेला तक्षशिला जाना, वहाँ जाकर गुरु की सेवा-शुश्रूषा कर विद्याभ्यास करना, मन्त्री, सामन्त आदि को न भाया। इसलिए राजा को उन्होंने सलाह दी—"महाराज! क्या हमारे नगर में शिल्प विद्या में पारंगत प्रवीण नहीं हैं? राज कुमार को अकेले ही तक्षशिला क्यों भेजा जाय? यह हमको ठीक नहीं लग रहा है"

राजा को यह सलाह पसन्द न आई। क्योंकि वह जब तक राज कुमार माना जाता, और राज महल नहीं छोड़ता, तब तक वह कुछ सीख न पाता। दूर देश जाकर, वहाँ साधारण विद्यार्थी की तरह गुरु की देखरेख में विद्या सीखने से ही आदमी कुछ जान-सीख सकता था।

इसलिये राजा ने पतले चमड़े की बनी पादुकाएँ, और ताड़ के पत्ते की बनी छतरी मात्र राज कुमार को देकर कहा—"तू तक्षशिला जाकर, शिल्पाचार्य के यहाँ अच्छी तरह विद्याभ्यास कर। जब उनके यहाँ शिक्षा समाप्त हो जाय, तब घर वापिस आना। उनको गुरु दक्षिणा देने के लिए हज़ार चान्दी की मुहरें भी साथ ले जा।"

'जातक कथा'

राज कुमार पिता के कथनानुसार तक्षशिला गया। वहाँ शिल्पाचार्य से मिला। उसने अपना उद्देश्य भी उनके सामने व्यक्त किया। हज़ार चान्दी के मुहरों की गुरु-दक्षिणा देकर, वह उनके पास विद्याभ्यास करने लगा। राज कुमार की शिल्प-शिक्षा यथा नियम प्रारम्भ हुई। उसकी बुद्धिमत्ता देखकर गुरु भी सन्तुष्ट हुए।

कुछ समय बीता। गुरु-शिष्य, सवेरे सवेरे, नियमित रूप से रोज़ नगर के बाहर वाली नदी में स्नान करने जाया करते। एक दिन, जब वे स्नान कर रहे थे, तो एक बुढ़िया कुछ तिल लेकर वहाँ आयी। उसने उनको पानी में साफ़ किया और नदी किनारे, चादर बिछाकर, उस पर उन्हें सुखाने लगी। राज कुमार ने यह देखा। जल्दी से स्नान कर, बुढ़िया को इधर उधर देखता पा, जल्दी से उसने मुट्ठी भर तिल उठाये और मुख में डाल लिये।

यद्यपि बुढ़िया ने यह देख लिया था, तो भी उसने किसी से कुछ न कहा।

अगले दिन भी, राज कुमार ने यही काम किया। तीसरे दिन भी यही किस्सा जारी रहा। लड़के की चोरी की आदत बढ़ती देखकर बुढ़िया को गुस्सा आ गया। जब शिल्पाचार्य स्नान समाप्त कर, किनारे पर आये, तो उसने कहा—"देखिये! तीन दिन से लगातार आपका शिष्य मेरे तिल चुराकर खा रहा है। मुझे इसकी फ़िक्र नहीं कि उसने मेरे तिल खाये हैं, पर मैं यह नहीं चाहती कि उसकी चोरी की आदत बने, और आपकी कीर्ति में भद्दा लगे। आप उसे ऐसा दण्ड दीजिये, ताकि फिर वह ऐसा काम न करे।"

शिल्पाचार्य ने घर पहुँचते ही, राज कुमार की पीठ पर, तीन बार बेंत लगाकर

कहा—"निषिद्ध कार्य करने की यह तुम्हें सज़ा है। फिर कभी ऐसा काम न करना।"

राज कुमार को गुरु पर बहुत क्रोध आया। परन्तु वह राज कुमार तो काशी में था, यहाँ तो वह एक साधारण विद्यार्थी ही था। यहाँ वह कुछ न कर सकता था। गुरु को उसको दण्ड देने का अधिकार था।

"जब मैं राजा बनूँगा, तो इस दुष्ट को किसी बहाने काशी बुलाऊँगा और इसकी खूब ख़बर लूँगा। अब तो लाचारी है; कुछ नहीं किया जा सकता।"—राज कुमार ने क्रोध में सोचा।

कालक्रम से, राज कुमार की शिक्षा समाप्त हुई। काशी जाने से पहिले, उसने गुरु को नमस्कार कर, उनका आशीर्वाद पाया। तब उसने गुरु से कहा—"गुरू जी! मेरे राजा बनने के बाद, आप ज़रूर एक बार काशी आइये। तब मैं आपका यथोचित सत्कार करूँगा।"

काशी राज्य पहुँचने के थोड़े दिनों बाद, राज कुमार का पट्टाभिषेक हुआ। एक दिन उसको अपने गुरु की याद आई। तुरन्त उसने एक नौकर को बुलाकर कहा—"तुम तक्षशिला जाओ। वहाँ शिल्पाचार्य से मिलकर उनको यह निमन्त्रण पत्र दो।"

निमन्त्रण पत्र के मिलने पर भी, शिल्पाचार्य काशी के लिये तुरन्त नहीं रवाना हुए। 'राज कुमार अभी अभी राजा बना है, इसलिये उसी मस्ती में होगा। जब वह राज्य की जिम्मेवारी जानने लगेगा, तभी जाना अच्छा है।'—शिल्पाचार्य ने सोचा।

कुछ दिनों बाद, शिल्पाचार्य, काशी में अपने शिष्य को देखने गये। राजा के गुरु आये हैं, यह सोचकर दरबारियों ने उनको उच्च आसन पर बिठाया, और उनका अच्छा आदर-सत्कार भी किया।

गुरु को देखते ही, राजा का पुराना क्रोध फिर जाग उठा। वह आग बबूला हो रहा था। उनकी बात को काटते हुए, उसने गुरु के मुँह की ओर देखते हुए पूछा—"जिसने मुट्ठी भर तिल चुराने के लिए दण्ड दिया हो, उसको अपने पंजे में पा, कभी छोड़ा जाता है!" दरबारियों के बिना जाने, शिल्पाचार्य के मन में मौत का डर पैदा कर, किसी न किसी प्रकार राजा उन्हें मारकर अपना बदला लेना चाहता था।

परन्तु शिल्पाचार्य घबराये नहीं। और तो और, उन्होंने राजा का रहस्य भरे दरबार में सबको बता दिया।

"राजा! जब तुम मेरे यहाँ शिष्य थे, तब तुमने वह कार्य किया, जो तुम्हें नहीं करना चाहिये था। यह गुरु का कर्तव्य है कि शिष्य को, दुर्व्यवहार के लिए यथोचित दण्ड दे और उसको सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करे। यदि मैंने उस दिन तुम्हें दण्ड न दिया होता तो तुम आज राजा होने के बदले चोर हुए होते। बुद्धिमान गल्ती पर दण्ड देनेवाले पर गुस्सा नहीं करते। वे उनके प्रति कृतज्ञता दिखाते हैं।"—शिल्पाचार्य ने कहा।

दरबारियों को सब कुछ मालूम हो गया। राजा को नीचा देखना पड़ा। वह सिंहासन से उतर पड़ा और गुरु के चरणों पर पड़कर कहने लगा—"मैं गल्त रास्ते पर जा रहा था। आप मुझे सही रास्ते पर लाये, इसके लिये मैं कृतज्ञ हूँ। मुझे माफ़ कीजिए।"

राजा की इच्छानुसार शिल्पाचार्य, तक्षशिला से आकर, काशी में ही रहने लगे और राज पंडित के पद से राजा का पथ-प्रदर्शन करने लगे।

[९]

[शिवदत्त जब सुरंग से बाहर निकल रहा था, तब नरवाहन के सैनिकों ने उसके दूसरे सिरे को घेर लिया। बाद में, शिवदत्त के सिपाहियों में और उनमें युद्ध हुआ। शिवदत्त के कई सिपाही मारे भी गये। तब शत्रुओं के सरदार को शिवदत्त ने ठंडा कर दिया। सरदार को मरा पा, सैनिक मैदान छोड़कर भाग गये। बाद में...]

"शिवदत्त! शुरू से ही भाग्य तुम्हारे साथ रहा, वरना तुम इतनी मुसीबतों में से सही-सलामत न निकल पाते" मन्दरदेव ने शिवदत्त की तरफ़ देखते हुए कहा।

शिवदत्त ने हँसकर कहा—"इसमें कोई सन्देह की बात नहीं, मैंने कभी अनुमान भी न किया था कि गुप्त-मार्ग के परली तरफ़ इतने सारे दुश्मन हमारी इन्तज़ारी कर रहे होंगे। परन्तु जब मैंने सौभाग्य से उनके सरदार को अपनी तलवार का शिकार बना दिया, तो नरवाहन के बाकी सैनिकों को खतम कर देने में कुछ देरी न लगी। परन्तु बाद में मुझे मालूम हुआ कि पेड़ों की आड़ में छुप छुपाकर दो-चार शत्रु भाग निकले थे। नहीं तो वे भी नहीं बच पाते।

घोड़े पर से गिरे दुश्मन को मैंने बाहर निकलवाया। घोड़ा मौत के मुँह में पड़ा, इधर उधर पैर पटक रहा था। शत्रु भी उसके पैरों की चोट से काफ़ी घायल हो गया था।

"समरसेन के मरे हुए चार-पाँच घंटे हुए होंगे। अब इस द्वीप का राजा नरवाहन है।"

"तो क्या यह सच है कि युद्ध में समरसेन घायल हो गया था?" मैंने पूछा।

"सच है...." कहते कहते, उसका गला एक तरफ़ झुक गया और उसने आँखें मूँद लीं।

"महासेनानी अब नहीं हैं—" यह सोचकर मुझे ऐसे लगता था, जैसे मेरे दिल पर कई चट्टानें यकायक गिर गई हों। वे महावीर थे, और महावीर की मौत ही मरा। इसमें अफ़सोस करने की ऐसी बड़ी बात न थी। उसकी आत्मा की शान्ति के लिए परमात्मा से प्रार्थना की।

अब हमें क्या करना चाहिये था? कुण्डलिनी देवी की कृपा से, हम सुरक्षित सुरंग में से निकल आये थे। हमें उतनी मुसीबतें नहीं झेलनी पड़ी थीं, जितनी कि मैंने कल्पना की थी। दुश्मनों से मुक़ाबला करते हुए मेरे छः अनुयायी मारे गये। अगर मैं झट अपने आदमियों के साथ जंगल में न भागता तो नरवाहन के और सिपाहियों का वहाँ आने का ख़तरा था।

वह अब और तब मरने को था। उसके मुख में थोड़ा पानी डाला। जो बात मैं जानना चाहता था, वह उसी के द्वारा जानी जा सकती थी। और कोई मुझे वह जानकारी न दे पाता।

प्यास बुझाकर, जब उस सैनिक ने लम्बी साँस ली, तो मैंने उससे समरसेन के बारे में पूछा—"क्या अभी वे ज़िन्दा हैं, या मर गये हैं?" यही प्रश्न मैंने उससे पूछा था।

दर्द के कारण कराहते उस सैनिक ने मेरी तरफ़ दयनीय शक्ल बनाते हुए कहा—

मैंने अपने सिपाहियों को एक जगह इकट्ठा कर, उनको वास्तविक परिस्थिति समझाई। उन सबने यह माना कि आज, नहीं, तो कभी न कभी, इस द्वीप को छोड़कर जाना ही होगा। समरसेन की मृत्यु के बाद इस द्वीप में, नरवाहन से लोहा लेने के लिए न किसी के पास हौसला था, न शक्ति ही।

मृत छः सिपाहियों की एक ही समाधि बनाकर अपने सिपाहियों को लेकर, मैं पास वाले घने जंगल की ओर चला। दो-तीन कोस चलने के बाद हमें जंगलियों का एक गाँव मिला। सैनिकों की पोशाक में, हथियार लिये हुए हमें देखते ही, उस गाँव के बड़े, बच्चे हमारे चारों ओर इकट्ठे हो गये।

"इस गाँव में तुम्हारा मुखिया कौन है? उससे बातचीत करनी है?"—मैंने उनसे पूछा। दो-चार मिनट में एक बूढ़ा हमारे पास आया। उसने आते ही पूछा—"आप कौन हैं? यहाँ किस काम पर आये हैं?"

मैंने अपने सिपाहियों को दिखाते हुए कहा—"ये सब बहुत थक गये हैं। कल से कुछ खाया भी नहीं है। क्या आप हमारी कुछ मदद कर सकते हैं?"

मेरी बात सुनते ही, वृद्ध और जंगलियों की तरफ़ देखने लगा। उसका देखना था कि एक एक जंगली, एक एक सिपाही को, अपने घर खिलाने-पिलाने ले गया। इन जंगली जातियों का आतिथ्य-सत्कार देख कर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ। वृद्ध ने मेरी तरफ़ देखकर कहा—"आइये, आप हमारे घर आइये। आप के खाने-पीने का मैं इन्तजाम करूँगा।"

मैं वृद्ध के साथ उसके घर गया। आध एक घंटे में, मुझे अच्छे से अच्छा भोजन परोसा गया। भोजन समाप्त होने तक

वृद्ध ने मुझसे किसी तरह की बातचीत न की। परन्तु मैं यह जान गया था कि उसकी अंगारे जैसी आँखें मुझे लगातार घूर घूरकर देख रही थीं।

"हम जंगली हैं। ये जंगल ही हमारे माल-मिल्कियत हैं। न हमने, न हमारे पुरखों ने, किसी राजा-महाराजा के सामने सिर झुकाया है।"—वृद्ध ने कहा।

मैंने सिर हिला दिया, कुछ कहा नहीं। वह क्या कहना चाह रहा था, मैं अच्छी तरह न जान सका। मैं देखता रहा।

"देश में कैसी कैसी खतरनाक घटनायें घट रही हैं, हमें अक्सर मालूम होती रही हैं। आप में से कईयों ने, हमारे नौजवानों को, खूब ललचा-उकसा कर, अपनी अपनी तरफ़ मिलाने की भी कोशिश की है। जंगलियों के सरदार के तौर पर मैंने अब तक उनकी दाल न गलने दी। सैनिकों की पोशाक पहिनकर, आपका इस जंगल में आने का मतलब क्या है?"—वृद्ध ने सीधा प्रश्न पूछा।

तब मुझे मालूम हुआ कि उसके मन में क्या सन्देह काम कर रहा था! उसका

सन्देह हटाने के लिए, मैंने यह ज़रूरी समझा कि उसको शुरू से अन्त तक, युद्ध का घटनाचार ब्योरा बताया जाय।

समरसेन के बारे में, उनको, हमारे मान्त्रिकों के द्वीप से कैसे परिचय हुआ, उनके कुण्डलिनी द्वीप में आने के बाद हुए देश में परिवर्तन, आखिर नरवाहन का धोखा देना—यह सब मैंने दो-चार शब्दों में, वृद्ध को कह सुनाया। सब सुनने के बाद, उसने मुझे घूरते हुए पूछा—"तो इसका मतलब यह हुआ कि जिन्होंने राज्य हथिया लिया है, तुम उनके दुश्मन हो!"

"हाँ"—मैंने जवाब दिया।

वृद्ध सिर झुकाकर थोड़ी देर सोचता रहा। फिर उसने पूछा—"तो क्या आप लोग, जंगल में रहकर, मौके ब-मौके, उन लोगों पर हमला करने की सोच रहे हैं!"

"हमारा यह उद्देश्य तनिक भी नहीं है।"—मैंने झट जवाब दिया।

मेरा जवाब सुनकर जंगलियों का सरदार बहुत खुश हुआ। चटाई पर से उठकर, मेरे दोनों हाथ पकड़कर उसने कहा—"अगर मेरे प्रश्न आपको बुरे लगे हों, तो
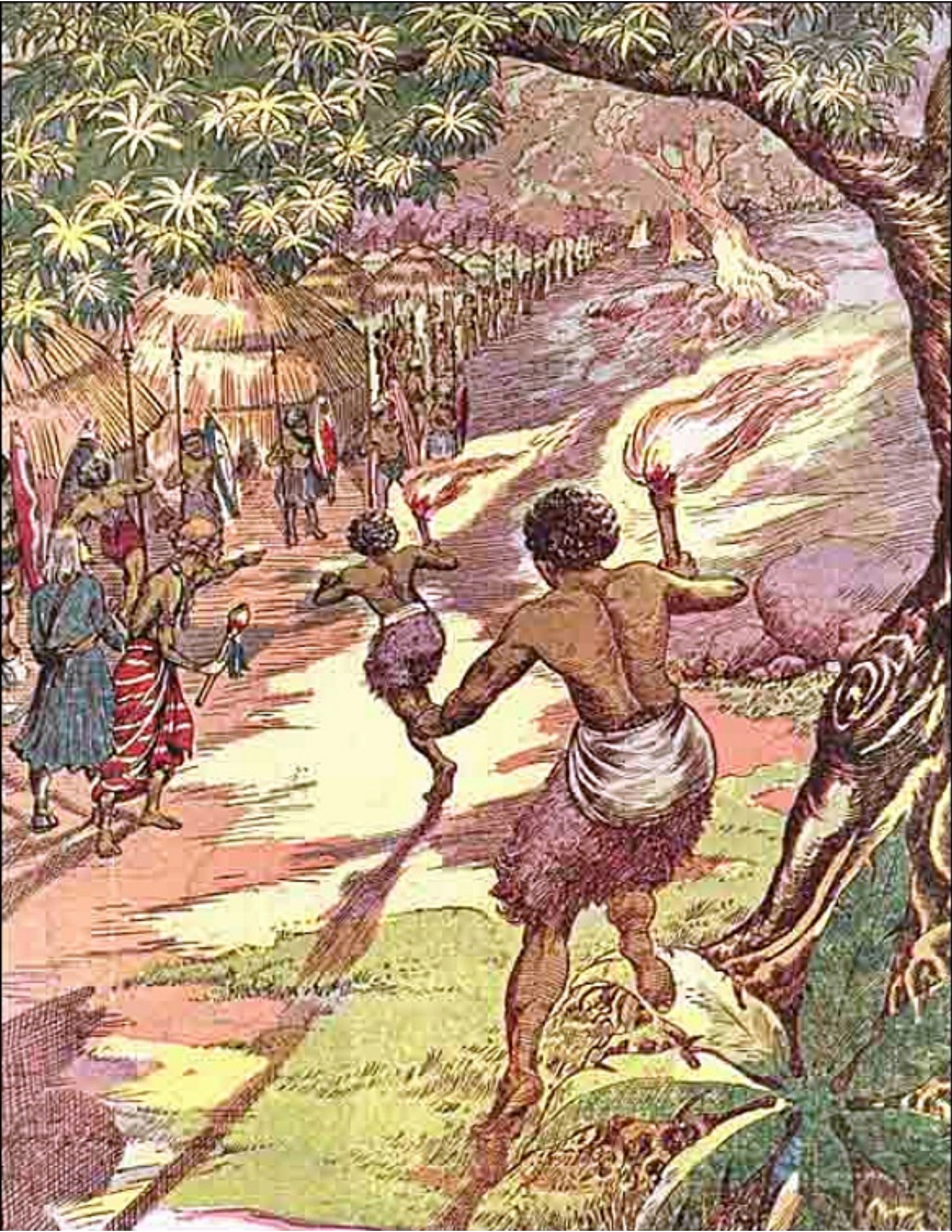
मुझे माफ़ कीजिये। अगर आप यह द्वीप छोड़कर जाना चाहें, तो मैं उसके लिए आपको ज़रूरी मदद दूँगा। मेरी इच्छा एक ही है कि आप इस शान्त जंगल में, हम लोगों के शान्त जीवन में गड़बड़ी न पैदा करें। अगर आप लोगों ने यहाँ से मौजूदा राजा के ख़िलाफ़ कोई भी विद्रोह किया तो उसके कारण इस सारे प्रान्त में ख़लबली मच जायेगी।"

उस दिन रात को अपने सिपाहियों को एक जगह इकट्ठा कर, मैंने सही हालत समझाई। वे सब मान गये कि नरवाहन के मालूम होने से पहिले ही, द्वीप को छोड़कर जाने में हमारी भलाई थी। पर हमने सोचा कुछ था, पर उस रात को हो कुछ और गया।

बरांडे में, मैं और मेरे सिपाही सोने की तैयारी कर रहे थे। हमारी थोड़ी दूर पर जंगली नौजवान, जंगली जानवरों को डराने के लिए, आग जलाकर, उसके चारों ओर सो रहे थे। आधी रात के समय, दूरी पर, ढोलों की आवाज़, और जंगल के जलने की ध्वनि सुनाई दी। दूरसे कुछ रोशनी भी साफ़ साफ़ दिखाई दे रही थी।

वह जंगलियों की बस्ती मिनटों में सजग होकर खड़ी हुई। गाँव के बूढ़े सरदार ने नौजवानों को भाले और ढाल देकर, गाँव का पहरा देने के लिए नियुक्त किया। कुछ को मशालें देकर, जिस तरफ़ से ढोलों की आवाज़ आ रही थी, उस तरफ़ भेजा।

"यह क्या आवाज़ है!"—मैंने वृद्ध से पूछा।

उसने ओंठ मींचकर खोलते हुए कहा—"कुछ भी हो सकता है। हो सकता है कि हाथी किसी बस्ती का सर्वनाश कर रहे हों। यह भी हो सकता है कि

कोई और जंगली जाति हम लोगों की थोड़ी बहुत सम्पत्ति पर हमला कर रही हो। पर मुझे एक बात पर अचरज हो रहा है।" बूढ़े ने आग की तरफ़ अँगुली उठाकर दिखाया।

"कहीं, नरवाहन के सैनिकों का हमला तो नहीं है? यह सन्देह मेरे दिल में रह रहकर हो रहा है।" इतने में दो चार जंगली नवयुवक, जहाँ हम खड़े हुए थे, भागे भागे चिल्लाते आये। उन्होंने वृद्ध से कहा—"हमारी बस्तियों पर सैनिक हमला कर चीज़ों को तहस-नहस कर रहे हैं और घर-बार सर्वनाश कर रहे हैं। उनमें से कई जंगल जलाने में भी लगे हुए हैं।"

"इस तरह का उपद्रव पहिले कभी न हुआ। आख़िर ये चाहते क्या हैं?" —जंगलियों के वृद्ध सरदार ने पूछा।

इतने में वहाँ नरवाहन के एक सैनिक को, उसके हाथ बाँधकर जंगली ले आये। "हुज़ूर! इससे पूछिये। यह सब हाल बता देगा। यह जंगली प्रान्त, यह कहता है, उसके सरदार सुबाहु की मिल्कियत है।" कहते हुए उन्होंने, सैनिक को दो बार भाले से भोंका।

जंगलियों के वृद्ध सरदार ने थोड़ी देर मेरी तरफ़ देखा, और फिर उस सैनिक से पूछा—"क्या हमारे आदमी ठीक कह रहे हैं? तुम्हारे सरदार सुबाहु को यह सारा प्रान्त किसने दे डाला है?"

"महाराज नरवाहन ने युद्ध में, हमारे सरदार सुबाहु की मदद के बदले यह सारा प्रान्त दान में दे दिया है। यहाँ रहनेवाले पशु-पक्षी, और मनुष्य, सब आज से उनके अधीन हैं। हम इस इलाके को अपने वश में करने के लिए ही यहाँ आये हैं।"—सैनिक ने कहा।

(अभी और है)

प्रत्यक्ष-प्रमाण
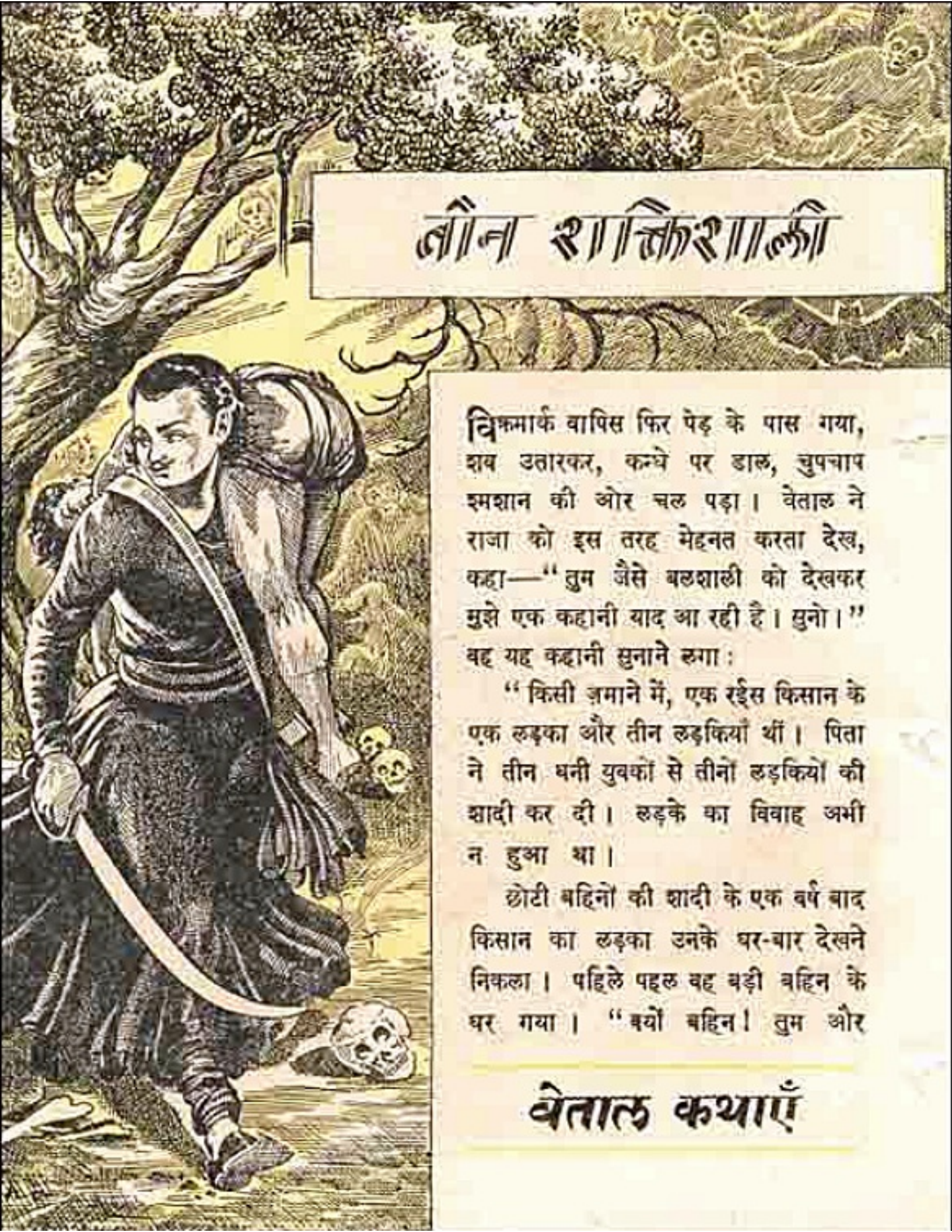
गाँव के कुछ लोग एक दोस्त के बारे में बातें करने लगे। कई ने उसके अच्छे गुणों की प्रशंसा की। आखिर एक व्यक्ति ने कहा—"वह अच्छा आदमी है, इस में कोई सन्देह नहीं; पर उसमें दो दोष हैं।"

दूसरों ने पूछा—"वे क्या हैं?"

"उसे जल्दी में गुस्सा आ जाता है, और गुस्से में न जाने वह क्या क्या कर बैठता है।" संयोगवश जिस व्यक्ति के बारे में बातचीत चल रही थी, वह उस समय वहाँ आ गया, और उसने आखिरी वाक्य सुन भी लिया। वह अपने आलोचक की तरफ़ लपका और उसका गला घोंटते हुए पूछा—"अरे, बदमाश! तेरी इतनी हिम्मत कि मुझे गुसैल कहे। मैं तेरा गला घोंट दूँगा।"

और लोगों ने बीच-बचाव करते हुए कहा—"क्या तुम ने खुद नहीं दिखा दिया है कि तुम्हारी गलत नुक्ताचीनी नहीं की गयी है?"

तीन शक्तिशाली

विक्रमार्क वापिस फिर पेड़ के पास गया, शव उतारकर, कन्धे पर डाल, चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़ा। वेताल ने राजा को इस तरह मेहनत करता देख, कहा—"तुम जैसे बलशाली को देखकर मुझे एक कहानी याद आ रही है। सुनो।" वह यह कहानी सुनाने लगा :

"किसी ज़माने में, एक रईस किसान के एक लड़का और तीन लड़कियाँ थीं। पिता ने तीन धनी युवकों से तीनों लड़कियों की शादी कर दी। लड़के का विवाह अभी न हुआ था।

छोटी बहिनों की शादी के एक वर्ष बाद किसान का लड़का उनके घर-बार देखने निकला। पहिले पहल वह बड़ी बहिन के घर गया। "क्यों बहिन! तुम और

वेताल कथाएँ

तुम्हारे पति ठीक तो हैं!"—उसने बहिन से पूछा।

"क्या ठीक हैं! तुम्हारे बहनोई के पास पैसा तो बहुत है, पर काम-धाम कुछ नहीं है। वे बहुत बड़े तीरन्दाज़ हैं। मैं नहा-धोकर, टीका लगाकर बैठती हूँ कि वे तीर लेकर मेरे नथ को निशाना बनाकर, बाण छोड़ने लगते हैं। कहीं निशाना चूक कर, बाण मुझे न लग जाये, इसी डर से मैं सूखी जा रही हूँ।"—बहिन ने कहा।

"यह बात है! मैं तुम्हारे पति को कुछ न कुछ काम दिखाऊँगा।" यह कह किसान का लड़का मंझली बहिन को देखने गया। "क्यों बहिन! तुम और तुम्हारे पति ठीक तो हैं!" उसने पूछा।

"क्या बताऊँ भैय्या! तुम्हारे बहनोई के पास पैसा तो बहुत है, पर करने-धरने को कुछ नहीं है। उनमें दिव्य-दृष्टि है। तीनों लोकों में चाहे कुछ भी हो रहा हो, वे देख लेते हैं। दिन-रात इन्द्र-लोक में होनेवाले रम्भा और ऊर्वशी के नृत्यों को देखकर वे खुश होते रहते हैं; वे हमारी दुनियाँ में मानों रहते ही न हों।"—मंझली बहिन ने अपने भाई से कहा।

"तो यह बात है! मैं तुम्हारे पति को कोई काम दिखा दूँगा। घबराओ मत।" कहते हुये किसान का लड़का अपनी छोटी बहिन को देखने गया।

"क्यों बहिन! तुम और तुम्हारे पति ठीक तो हैं!"—उससे अपनी छोटी बहिन से पूछा।

"तुम्हारे बहिनोई के पास पैसा है, मगर काम-काज कुछ नहीं है। वे वायु-वेग से भाग सकते हैं। इसलिये वे घर में ही नहीं रहते हैं। सबेरे होते ही, वे काशी भाग जाते हैं, और विश्वेश्वरालय में दीपाराधना करते हैं। वहाँ से भागकर वे रामेश्वर जाते हैं, और वहाँ भी पूजा करते हैं। उसके बाद, पूर्वी समुद्र में और पश्चिमी समुद्र में स्नान करके रात को घर वापिस आते हैं।"—छोटी बहिन ने अपने भाई से कहा।

"तो यह बात है! मैं तुम्हारे पति के लिए कोई काम ढूँढूँगा। चिन्ता मत करो।" किसान का लड़का अपने घर चला गया। और अपने तीनों बहनोइयों को, उनकी पत्नियों के साथ घर आने के लिए खबर भिजवाई। वे सब आये भी।

किसान के लड़के ने बहनोइयों को एक जगह बिठाकर कहा—"आप तीनों बहुत शक्तिशाली हैं, पर आप अपनी शक्तियों का सदुपयोग नहीं कर रहे हैं। अगर महीने भर आप यात्रा करके चोल देश पहुँच सकें, तो वहाँ आपको अपनी शक्ति का उपयोग करने का अच्छा अवसर मिलेगा। आपकी शक्ति के बारे में संसार को मालूम हो जायगा।"

वे उसकी सलाह मान गये और तीनों थोड़े दिनों बाद चोल देश में पहुँचे। वहाँ जाते ही, उन्होंने एक बुढ़िया के यहाँ

बसेरा किया। उन्होंने बुढ़िया से पूछा—"क्यों माई जी! इस नगर में आजकल क्या हो रहा है?"

बुढ़िया ने आहें भरते हुए कहा—"हो क्या रहा है! हमारे राजा की लड़की, कह रही है कि वह उसी से शादी करेगी, जो देवलोक से उसको खिले हुए पारिजात पुष्प लाकर देगा; और किसी से नहीं। न जाने पारिजात पुष्प कहां है! कितनी दूर है! उनको मुरझाने से पहिले कोई ला सकेगा कि नहीं! इसी फ़िक्र में हमारे राजा कांटे हो रहे हैं।"

तीनों शक्तिशाली, यह सुनकर सीधे राज महल में पहुँचे और राजा से उन्होंने कहा—"महाराज! सुना है, आपकी लड़की उसीसे शादी करेंगी, जो खिले हुए पारिजात पुष्प को लाकर देगा। हम उसको लाकर देंगे।"

"और हमें क्या चाहिये! जाइये, पुष्प ले आइये।"—राजा ने कहा।

वे तीनों नगर के बाहर गये। दिव्य-दृष्टि वाले ने चारों तरफ़ देखकर एक ओर इशारा किया। "इस दिशा में दो हजार योजन दूर पर एक जंगल के बाद, बहुत-से पारिजात के वृक्ष हैं।"—उसने कहा।

तुरन्त, वायु-वेग से भागने वाला बहिनोई उस तरफ़ भागा। वह यद्यपि भागते भागते अन्तर्धान-सा हो गया, पर दिव्य-दृष्टिवाले उसको देखते हुए कहा—"अब वह पारिजात के बाग में पहुँच गया है। फ़ूल तोड़ रहा है। पोटली बाँध रहा है। वापिस चल पड़ा है। जंगल में, आराम करने के लिये एक पेड़ के नीचे सो रहा है। अरे, अरे, शेर पास के पेड़ के थाल से उसे देख रहा है।"

"कहां है शेर! उँगली से दिखाओ, मैं उसे तुरत मार दूंगा"—तीरन्दाज ने कहा।

दिव्य-दृष्टि वाले ने, शेर जिस तरफ़ था, उस तरफ़ उँगली दिखाई। झट तीरन्दाज़ ने निशाना बाँधकर तीर छोड़ दिया।

"बाण की चोट से शेर मर गया है। उसके गर्जन से वह उठ खड़ा हुआ है। आ रहा है। अब कोई डर नहीं है।" —दिव्य-दृष्टिवाले ने कहा।

थोड़ी देर बाद, वह व्यक्ति पारिजात पुष्प लेकर वापिस आ गया। तीनों मिलकर राजा के पास फूल ले गये। उन्होंने कहा— "महाराज! हम खिले हुए यह पारिजात पुष्प लाये हैं।"

राजा हक्का-बक्का रह गया। "तुममें से इसे कौन लाया है!"—उसने पूछा।

"दीख नहीं रहा है! हम तीनों ही लाये हैं!"—उन तीनों ने कहा।

राजा पशोपेश में पड़ गया। वह यह न निश्चय कर सका कि उन तीनों में से किसके साथ अपनी लड़की की शादी करे।"

बेताल ने यह कहानी सुनाकर राजा से कहा—"राजा! बताओ, उन तीनों में कौन राजकुमारी से शादी करने योग्य था। अगर तुमने जान-बूझकर इसका जवाब न बताया तो तुम्हारा सिर फोड़ दूँगा।"

"राजकुमारी से विवाह करने के लिये तीनों ही योग्य न थे। यद्यपि वे शक्तिशाली थे, तो भी उनमें एक भी यह नहीं जानता था कि अपनी शक्ति का कैसे उपयोग करे। उनके साले ने ही शक्ति उपयोग करने का रास्ता दिखाया था। इसलिये वह ही राजकुमारी से शादी करने का अधिकारी है"—विक्रमार्क ने कहा।

राजा का मौन-भंग होते ही, बेताल शव के साथ अन्तर्धान हो गया, और फिर पेड़ पर चढ़ बैठा।

मीठे आम

किसी रईस के पास एक आम का बाग़ था। आम का मौसम था, उसको बाग़ से ताज़े आम मँगाकर खाने की मर्ज़ी हुई।

उसने एक नौकर को बुलाकर, जिसको हाल में ही रखा गया था, कहा—"बाग़ में जाकर आम ले आओ। मगर यह याद रखना कि आम बहुत उम्दा हों। मुझे इधर उधर के फ़ाल्तू आम नहीं चाहिये। समझे!"

नौकर ने बाग़ में जाकर कुछ आम तोड़े और हरेक आम को उसने चखकर देखा कि वह मीठा है कि नहीं। उसने जो आम अच्छे न थे, बाग़ में ही छोड़ दिये। बाकी अच्छे, मीठे आम लेकर मालिक के पास पहुँचा।

"मालिक! ये आम बहुत मीठे हैं।"

"पर उन सब को तो किसी ने जूठा कर रखा है।"—मालिक ने कहा।

"हाँ, मालिक! बिना चखे कैसे मालूम होता कि वे मीठे हैं या खट्टे।"—नौकर ने कहा।

रास्ता दिखाओ!
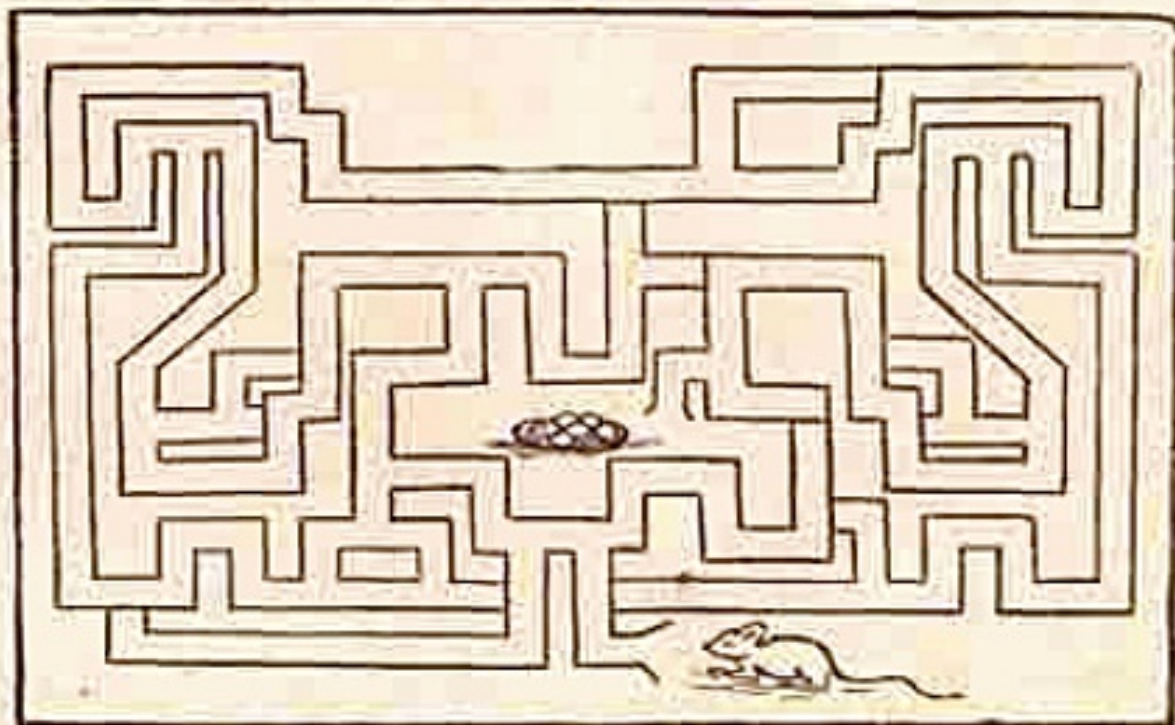
अपराधी कौन?

कांचीपुर नगर पर महाराजा चन्द्रगुप्त राज्य किया करता था। उनके दो जुड़वाँ बच्चे पैदा हुए। उन दोनों का उन्होंने कुश, लव नाम रखे।

कुश और लव ने मेहनत से विद्याध्ययन किया और सोलह वर्ष की उम्र में ही दोनों ही बहुत बुद्धिमान हो गये। परन्तु दोनों का मन एक जैसा न था। कुश राजस स्वभाव का था और लव सात्विक स्वभाव का। इसलिए उनके पिता का ख्याल था कि कुश ही राजा बनने के योग्य था, लव नहीं।

एक बार कुश और लव में कोई वाद-विवाद चल पड़ा। दोनों फ़ैसले के लिए पिता के पास गये। पिता का तो कुश पर पक्षपात था ही; इसलिए उसने लव के विरुद्ध फ़ैसला ही न दिया, अपितु उसका अपमान भी किया। अपमानित होने के बाद, लव घर छोड़ कहीं चला गया।

जब से उसने घर छोड़ा था, उसका वैराग्य और भी बढ़ गया। उसने अपना नाम बदलकर 'अल्प' रखा। वह देश-देशान्तर में पर्यटन करने लगा।

एक रोज़ जब वह एक ब्राह्मणों के गाँव में से गुज़र रहा था, तो एक घर के बाहर कोई ब्राह्मण महाभारत का शान्ति-पर्व पढ़ रहा था। गाँव के कुछ लोग बैठे सुन रहे थे। जब अल्प ने उस ब्राह्मण का भारत-पठन सुना, तो उसको और सुनने की इच्छा हुई। इसलिए वह भी वहाँ और लोगों के साथ बैठकर सुनने लगा।

महाभारत पढ़नेवाले व्यक्ति का नाम अग्निवर्मा था। उसकी सुरस नाम की एक सुन्दर लड़की थी। अग्निवर्मा उसका विवाह

श्री शिवकुमार पांडेय

करना चाहता था। परन्तु सुरस की ज़िद थी कि वह कुँवारी ही रहेगी। कइयों ने उसको कई तरह शादी करने के लिए कहा, पर उसने अपनी ज़िद न छोड़ी।

पठन खतम होते ही, अल्प ने अग्निवर्मा को नमस्कार करके कहा—"आपके पुराण-पठन से मेरा एक सन्देह दूर हो गया है। अब तक मैं यह सोचा करता था कि सन्यास ही एक मुक्ति-मार्ग है। परन्तु अब मैं यह जान गया हूँ कि गार्हस्थ्य आश्रम, सन्यासाश्रम से कोई कम नहीं है!"

अल्प ने यद्यपि फटे-पुराने, मैले कपड़े पहिन रखे थे, तो भी ग़ौर से देखने पर वह बहुत सुन्दर और तेजस्वी लगता था। अग्निवर्मा ने पूछा—"बेटा! तुम्हारा नाम क्या है? तुम्हारे माँ-बाप कौन हैं? तुम्हारी जात क्या है?"

"मेरा नाम अल्प है; मैं और बातें नहीं जानता हूँ। धर्म के बारे में मुझे बहुत श्रद्धा है!"—अल्प ने कहा।

"अगर तुम्हारा अपना कोई नहीं है, तो हमारे घर में ही रहो; रोज़ पुराण-पठन सुनो।"—अग्निवर्मा ने कहा। अल्प ने वहाँ रहना स्वीकार कर लिया।

सुरस भी, जिसने कभी भी किसी को आँख उठाकर न देखा था, अग्निवर्मा को देखते ही दिल दे बैठी। जब उसने एक बार अल्प को गाँव से बाहर जाते देखा, तो वह भी बाल्टी और रस्सी लेकर पानी भरने, गाँव के बाहरवाले कुँए की ओर उसके पीछे पीछे गई।

कड़ी दुपहरी। बाहर कोई न था। एकान्त में सुरस ने अल्प से अपने मन की बात कही।

"तुम गुरु की लड़की हो। मेरी बहिन के समान हो। तुम्हारा मुझे चाहना बहुत बड़ा

पाप है।"—अल्प ने कहा। सुरस ने बहुत समझाया, पर कोई फ़ायदा न हुआ। वह रोती रोती घर गई और पिता से उसने शिकायत की कि अल्प ने उसके साथ बलात्कार करने की कोशिश की थी।

अग्निवर्मा का विश्वास था कि उसकी लड़की पुरुष-द्वेषिणी थी; इसलिये उसने सोचा कि अल्प इसी दुरुद्देश्य से उसके घर में रह रहा था। उसने जाकर ग्रामाधिकारी से फ़रियाद की।

ग्रामाधिकारी ने अग्निवर्मा, सुरस और अल्प को बुलवाया। उनसे पूछतलब की। सुरस और उसके पिता की गवाही एक ही जैसी थी। अल्प ने अपने आप कुछ न कहा। जब उससे पूछा गया कि तुम अपराधी हो न? तो उसने "हाँ" कह दिया। "क्या तुम्हें सज़ा दी जानी चाहिये?"–ग्रामाधिकारी ने जब पूछा, तो उसने कहा—"सज़ा दी जा सकती है।" "तुमने यह नीच-कार्य क्यों किया?"–पूछे जाने पर उसने कहा—"हुज़ूर, काम-वासना हर पाप के लिए रास्ता दिखाती है।"

कानून के अनुसार, अल्प के हाथ-पैर कटवाने की सज़ा दी जानी चाहिये थी;
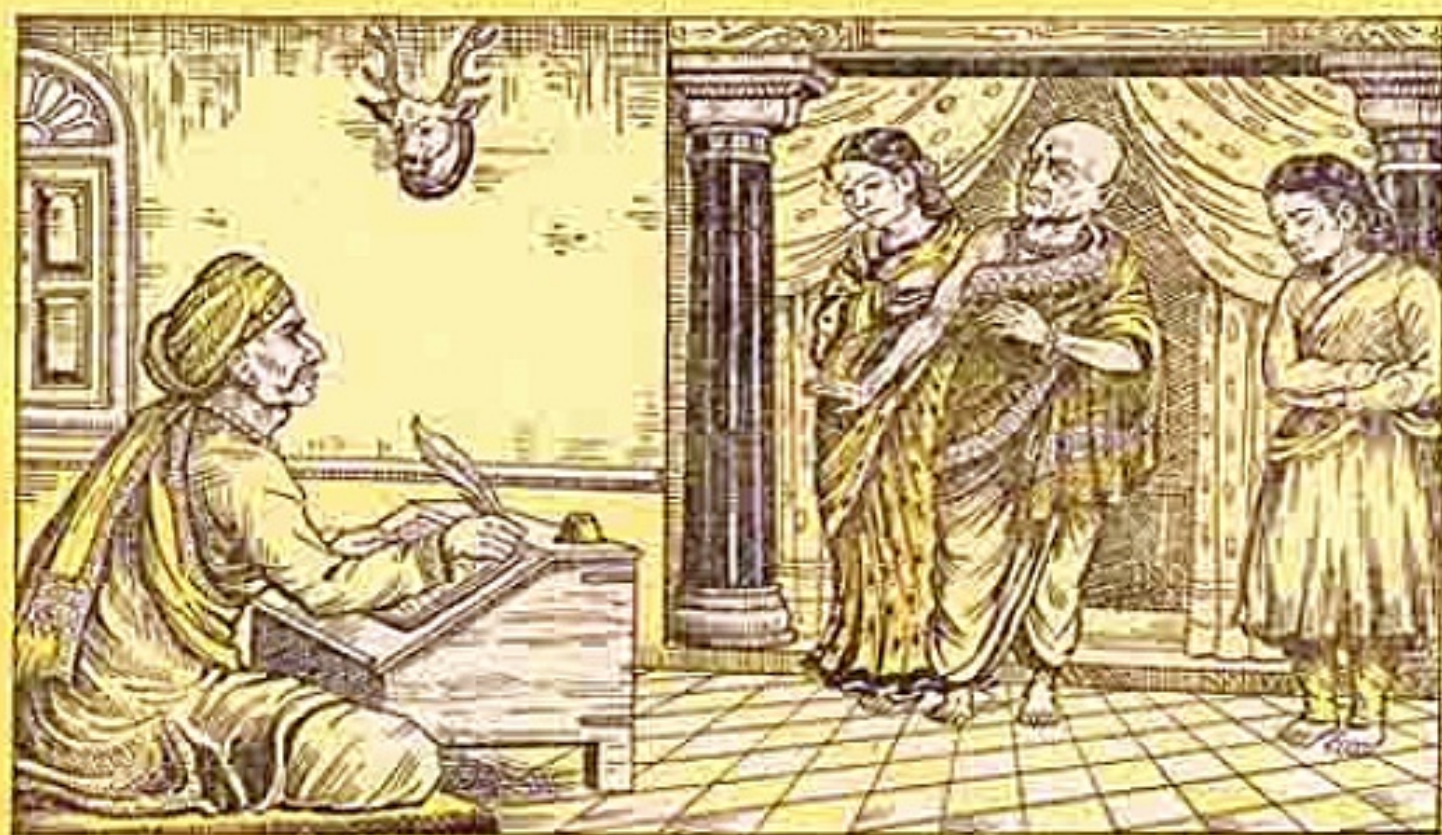
परन्तु ग्रामाधिकारी के मन में यह सन्देह घर कर गया कि अल्प निर्दोषी है। सुरस के सिवाय, इस दोषारोपण के लिए कोई और साक्षी न था। उसकी गवाही पर अविश्वास भी नहीं किया जा सकता था, क्योंकि सब जानते थे कि वह पुरुषों से द्वेष करती थी।

ग्रामाधिकारी कोई निर्णय न कर सका। उसने यह फ़रियाद उस प्रदेश के सामन्त के पास फ़ैसले के लिए भेजी। उस सामन्त का नाम था देववर्मा।

जब देववर्मा ने फ़रियाद से सम्बन्धित गवाहों के बयान की जांच की, तो उसको ग्रामाधिकारी पर गुस्सा आया। अल्प ने अपना अपराध स्वीकार कर लिया था। सुरस की पवित्रता के बारे में कोई भी शंका न थी। अल्प पर ही सन्देह किया जा सकता था। उस हालत में ग्रामाधिकारी ने उसको दण्ड क्यों नहीं दिया?

देववर्मा के एक लड़की थी, जिसका नाम यमुना था। वह बहुत ही चतुर थी। जब कभी देववर्मा को सन्देह होता तो वह अपनी लड़की से सलाह-मशविरा करता। उसने अग्निवर्मा की फ़रियाद के बारे में यमुना से कहा। उसने कहा—"जब तक

अग्निवर्मा, सुरस, और अल्प को बुलाकर, स्वयं पूछतछ नहीं की जाती है, तब तक यह न मालूम हो सकेगा कि ग्रामाधिकारी ने दण्ड देने में क्यों संकोच किया था।

तीनों को बुलाया गया। तीनों से सामन्त ने प्रश्न पूछे। उन्होंने वही गवाही दुहरा दी, जो उन्होंने ग्रामाधिकारी के सामने दी थी। पर सामन्त को भी यह सन्देह हुआ कि अल्प निर्दोषी है। देववर्मा का मन, अल्प को दण्ड देने के लिए न माना। परन्तु निर्दोषी समझकर, वह उसको छोड़ भी नहीं सकता था। उसने फिर अपनी लड़की से विचार-विनिमय किया। "जब तक इस मामले में, प्रत्यक्ष गवाही नहीं दी जाती, तब तक इसका फ़ैसला नहीं किया जा सकता"—यमुना ने अपने पिता से कहा।

"जो चीज़ कभी की गुज़र चुकी है, उसके बारे में यह गवाही कैसे तैयार की जा सकती है!"—देववर्मा ने पूछा।

"यह काम मुझ पर छोड़ दो, पिता जी। फ़ैसला देने के लिए, एक सप्ताह का समय लो। बाकी सब मैं स्वयं देख लूँगी।"—यमुना ने हँसते हुए कहा।

यमुना ने अग्निवर्मा के रहने का इन्तज़ाम राज पुरोहित के घर किया, और सुरस को राज महल के एक कमरे में ही ठहराया। तुरत पिता के पास जाकर उसने कहा—"इस फ़रियाद में तुम और हम साक्षी हैं। आओ, अब देखने चलें।" कहते हुए वह अपने पिता को एक कमरे में ले गई! जब राजा ने किवाड़ के छेद में से देखा तो कमरे में, अल्प, शोक-मग्न-सा बैठा था।

इस बीच में, सुरस ने अपने कमरे को खूब छाना-बीना। वह कमरा खूब अच्छी तरह सजाया गया था। जहाँ देखो, वहाँ

शीशे, दीप-स्तम्भ, अगर बत्ती का धुँआ। परन्तु बहुत देर इन्तज़ार करने पर भी वहाँ कोई न आया। वह कमरे में घूमने लगी। एक दरवाज़े के पास आकर उसने किवाड़ खटखटाया। क्योंकि किवाड़ में चटखनी न लगी थी, वह खुल गया। अगले कमरे में क्या है, यह देखने के लिए ज्योंही सुरस ने आगे कदम रखा, तो उसको सिर नीचे किये, कुर्सी पर अल्प बैठा दिखाई दिया।

सुरस ने इधर उधर देखा। किसी को वहाँ न पा, वह भागी भागी अल्प के पास गई। अल्प ने सिर उठाकर उसको देखा और फिर सिर नीचे कर लिया।

"अब तुम्हें सज़ा मिलकर ही रहेगी। तुम मुझे क्यों नहीं चाहते हो! क्यों वृथा अपने हाथ-पैर कटवाते हो! ग्रामाधिकारी के सामने तुम ही मान गये थे कि तुमने ग़लती की है। इसका मतलब कि तुम मुझ से प्रेम करते हो न! तुम मेरा प्रेम स्वीकार करो, तो मैं तुरत अपनी फ़रियाद वापिस ले लूँगी।"—सुरस ने अल्प से कहा।

सब सुनकर, अल्प ने बिना सिर उठाये कहा—"जाओ, अब मुझे तुमसे बात करने की कोई ज़रूरत नहीं है, जाओ यहाँ से!"

यह सब देववर्मा और यमुना ने अपनी आँखों देखा। अगले दिन देववर्मा ने अपने दरबार में फ़ैसला सुनाया। फ़ैसले के अनुसार, सुरस दोषी थी और अल्प निर्दोषी।

"सुरस ने एक पर-पुरुष को चाहा ही नहीं, बल्कि उस पर, निष्कारण, एक झूठा आरोप भी लगा कर, उसको दण्ड दिलवाना चाहा। तो भी मैं उसको बिना दण्ड दिये ही छोड़ देता हूँ।"—देववर्मा ने कहा।

राजा ने अल्प को अपना अतिथि बनाकर यमुना के साथ उसका विवाह

करना चाहा। पहिले पहल अल्प न माना। परन्तु जब उसको यह मालूम हुआ कि वह यमुना की बुद्धिमत्ता और प्रयत्न से ही, निर्दोषी सिद्ध हुआ था, तो वह मान गया। दोनों का धूमधाम से विवाह हुआ।

यह बात सुनते ही सुरस ने अपने पिता को उकसाते हुये कहा—"यह देववर्मा ने, अल्प को अपना दामाद बनाने के उद्देश्य से ही, हमारी फ़रियाद रद्द कर दी है। क्योंकि मेरे साथ न्याय नहीं किया गया है, इसलिये सब मुझे ही बुरा-भला कह रहे हैं। हमें सामन्त के खिलाफ़ महाराजा चन्द्रगुप्त से शिकायत करनी चाहिये।" अग्निवर्मा का तो विश्वास था कि उसकी पुत्री बहुत अच्छी थी, इसलिये उसने उसके कहने के अनुसार शिकायत की।

महाराजा चन्द्रगुप्त ने देववर्मा और अल्प को अपने दरबार में बुलवाया। अल्प को देखते ही, वह पहिचान गया कि वह उसका पुत्र लव ही था। वह आनन्दाश्रु बहाने लगा। क्योंकि लव के चले जाने के बाद, कुश बहुत मनमानी करने लगा था। चन्द्रगुप्त का यह ख्याल पका हो गया था कि वह राजा बनने योग्य न था, लव ही सचमुच शान्त स्वभाव के कारण, राज्य का अधिकारी था।

लड़का तो मिल गया था, पर वह एक अपराधी के रूप में उपस्थित किया गया था, इसलिये महाराजा चन्द्रगुप्त चिन्तित भी थे। इस सम्बन्ध में, यमुना ने विवरण सहित, अपनी चाल के बारे में राजा से कहा।

यह सुनते ही, सुरस के पिता अग्नि वर्मा ने वैराग्य लेना निश्चय किया। वह वहीं से वन चला गया। घर भी न गया।

कांचीपुर का राज्य लव को दिया गया। वह यमुना के साथ बहुत दिनों तक उस राज्य पर राज करता रहा।

असली लक्ष्मी

किसी ज़माने में धीमन्त उज्जयिनी का राज्य करता था। वह बड़ा अमीर था।

एक दिन धीमन्त के पास एक योगी आया। योगी को देखकर राजा ने पूछा—"क्या चाहिये?"

"महाराज! मेरे पास एक लोहे का लोटा, और एक डण्डा है। उन्हें आपको बेचकर पैसे ले जाना चाहता हूँ।"

"कितने में बेचोगे?"—राजा ने पूछा।

"लाख रुपये।"—योगी ने कहा।

राजा ने न आगे देखा, न पीछे, मन्त्रियों की भी न सुनी। योगी को एक लाख रुपया देकर, उसकी दोनों चीज़ों को खरीद लिया।

उस दिन रात को सोते ही धीमन्त को एक सपना आया। उसको एक स्त्री, जेवर-जवाहरातों से सजी, राज महल छोड़कर बाहर जाती हुई दिखाई दी।

"तू कौन है?"—उसने स्त्री से पूछा।

"मैं धन-लक्ष्मी हूँ।"— उस स्त्री ने उत्तर दिया।

"तू क्यों चली जा रही है?"—राजा ने पूछा।

"लाख रुपये में, तूने एक टूटा-फूटा, लोहे का लोटा, और डण्डा खरीदकर, क्यों मेरा अपमान किया है? मैं अब तेरे घर एक क्षण भी न रहूँगी।"—धन-लक्ष्मी ने कहा।

"जा, ज़रूर जा! किसने रोका है?"—राजा ने बेपरवाही से कहा।

दूसरे पहर, राजा को सपने में एक और स्त्री दिखाई दी। वह अच्छी हट्टी-कट्टी तन्दुरुस्त मालूम होती थी, जवानी में थी।

"तू कौन है?"—राजा ने पूछा।

"मैं बल-लक्ष्मी हूँ।" उसने कहा।

श्रीमती बी. मंजुलता

"क्यों जा रही है?"—राजा ने पूछा।

"तुझे धन-लक्ष्मी ने छोड़ दिया है। तब तू मुझे कितनों दिनों तक रख सकेगा? मैं भी जा रही हूँ।" बल-लक्ष्मी ने कहा।

"जा, ज़रूर जा!"—राजा ने कहा।

तीसरे पहर, राजा को सपने में एक बूढ़ी दिखाई दी। वह भी राज महल छोड़कर जा रही थी। उसके सिर के बाल सफ़ेद हो गये थे। परन्तु उसका मुँह अब भी चमचमा रहा था।

"तू कौन है?"—राजा ने पूछा।

"मैं ज्ञान-लक्ष्मी हूँ।"—उसने कहा।

"क्यों जा रही है?"—राजा ने पूछा।

"बल-लक्ष्मी के चले जाने के बाद, मेरे लिये भला यहाँ क्या जगह मिलेगी? मैं भी जा रही हूँ।" ज्ञान-लक्ष्मी ने कहा।

"जा, ज़रूर जा।"—राजा ने बड़ी लापरवाही से कहा।

चौथे पहर, राजा को सपने में एक दिव्य स्त्री दिखाई दी। वह भी राज महल छोड़ कर जा रही थी। उसकी आँखें तेज़ के कारण चमक रही थीं।

"तू कौन है?"—राजा ने पूछा।

"मैं धैर्य-लक्ष्मी हूँ।"—उसने कहा।

राजा ने उसका रास्ता रोककर पूछा—"तू क्यों जा रही है?"

"सब तुझे छोड़कर जा रहे हैं। तब मैं ही क्यों तेरे पास रहूँ?"—धैर्य-लक्ष्मी ने कहा।

राजा ने तुरत उसका हाथ पकड़कर कहा—"तुझे मैं न जाने दूँगा। अगर तू मेरे पास है, तो मेरे पास सब कुछ है।"

धैर्य-लक्ष्मी ने हँसकर कहा—"अच्छा! तब तो मैं तेरे पास ही रहूँगी।" राजा सन्तोष से आँखें खोलकर उठ बैठा।

चालाक माँ-बेटी

[३]

ख़ालिद ने जब दिलैला से चोरी के बारे में पूछा तो उसने कहा—"आप क्या पूछ रहे हैं, मैं नहीं समझ पा रही हूँ। मैं तो यह भी नहीं जानती कि चोरी किसे कहते हैं।"

तब अन्धेरा हो चुका था। उस दिन उससे पूछ-तलब नहीं की जा सकती थी। उसने बहुत-सी करतूतें कर रखी थीं। बहुतों से पूछताछ करनी थी। और वह अपना गुनाह मानने के लिए भी तैयार न थी। ख़ालिद् ने सोचा कि उसको जेल में रखा जाये, सवेरे होने पर फिर सुनवाई शुरू की जाय। परन्तु जेलर ने जिम्मेवारी लेने से इनकार किया। "यह बहुत चालाक चोर है। जैसे तैसे धोखा देकर, क़ैद से भाग निकलेगी।"—उसने कहा।

"हाँ, यह तो ठीक है। सुनवाई शुरू होने तक, उसको पाँच दस आदमियों के बीच में रखना ही अच्छा है।"—ख़ालिद ने कहा। वह घोड़े पर सवार होकर चला गया। पाँचों फ़रयादी, दिलैला को घसीटते हुए शहर के बाहर ले गये। वहाँ उसको खुली जगह में एक खम्भे से बाँधकर, पाँचों फ़रियादियों को पहरा देने के लिए कह, ख़ालिद शहर वापिस चला गया।

पाँचों ने उसके चारों ओर बैठकर, दिलैला को कोसा। परंतु भोजन करते ही वे ऊँघने लगे, क्योंकि तीन रातों से, उन्होंने घड़ी भर भी आँखें बन्द न की थीं।

आधी रात के बाद, उस जगह दो व्यक्ति आये। एक शहर छोड़कर कहीं जा रहा था, और दुसरा शहर में जा

कुमारी रज़िया रेहाना

रहा था। दोनों ठहरकर आपस में बातचीत करने लगे। उन दोनों की बातें दिल्ला को भी सुनाई पड़ रही थीं।

"बग़दाद में, बताओ, ऐसी चीज़ कौन-सी है, जिसका सब से अधिक मज़ा उड़ाया जा सकता है!"—शहर में आनेवाले ने, शहर छोड़कर जानेवाले से पूछा।

"मलाई से चिपुड़ी हुई, शहद की रोटियाँ। मैं शहर में तीन दिन रहा, और तीनों दिन यही रोटियाँ खाता रहा। उनके खाने से जी नहीं ऊबता, मर्ज़ी होती है कि खाते जाओ।"—शहर से जानेवाले ने कहा।

"अच्छा! चाहे कितना भी खर्च हो, मैं शहर में जितने दिन रहूँगा, ऐसी ही मलाई से चिपुड़ी हुई शहद की रोटियाँ खाऊँगा।"—शहर में आनेवाले ने कहा। जानेवाला चला गया। शहर में आनेवाला उस तरफ़ गया, जहाँ दिल्ला बाँधी गयी थी।

दिल्ला तो उनकी बातें सुन ही रही थी। उसको एक चाल यकायक सूझी। आनेवाला परदेशी था! वह नहीं जानता था कि वह कौन है। इसलिये आसानी से उसकी आँखों में धूल झोंकी जा सकती थी।
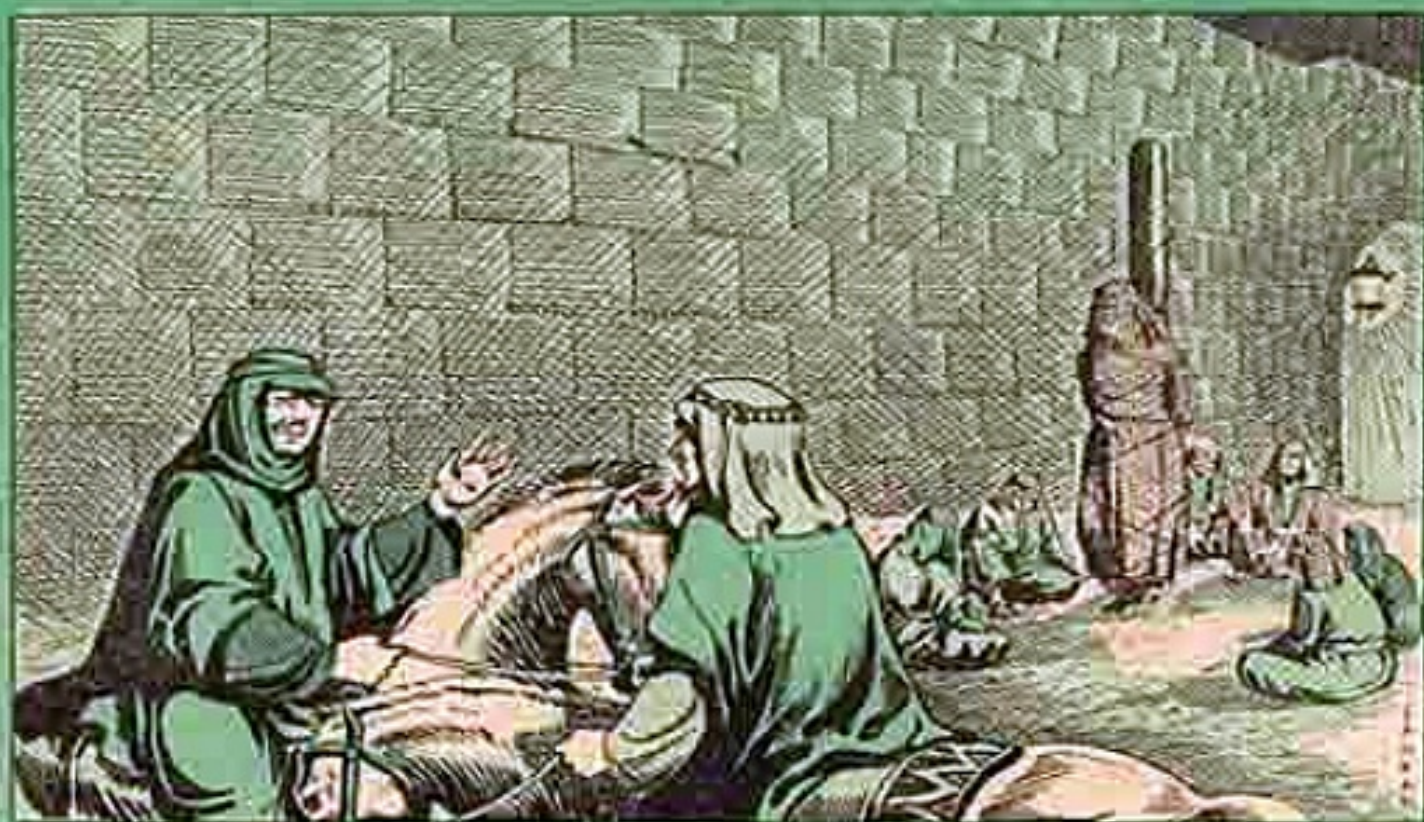
यह सोचकर दिलैला ने यह कहना शुरु कर दिया—"मुझे नहीं चाहिये। मैं नहीं खाऊँगी।" उस व्यक्ति ने घोड़े से उतर कर पूछा—"क्या बात है! तू कौन है! तुझे यहाँ क्यों बाँधा गया है!"

"क्या बताऊँ बेटा! मेरे पति ने, शहद की रोटियों पर मलाई चुपेड़कर बेचा, और लाखों रुपया बनाया। पहिले पहल तो मुझे वे पसन्द थीं, पर बाद में मैं ऊब उठी। कुछ दिन पहिले हमारी दुकान पर कई बड़े आदमी आये। मेरे पति ने उनके साथ मुझे भी शहद की रोटी खाने के लिये मजबूर किया। मैंने रोटियों को मुँह में जो रखा तो ऐसा लगा, जैसे उल्टी आ रही हो। आये हुए लोगों को संदेह हुआ कि रोटियों में कुछ है। वे बिना खाये ही चले गये। मेरे पति को पैसे तो मिले ही नहीं। अलावा इसके सारी रोटियाँ फ़ालतू गईं। पर इस में मेरा क्या क़सूर है! मुझे शहद की रोटियों को खाने के लिये मजबूर करना, मेरे पति की ग़ल्ती थी। परन्तु उसने जाकर मेरी शिकायत की कि मैंने उसका कारोबार बिगाड़ा है। न्यायाधिकारी ने मुझे यह सज़ा दी है कि

मुझे यहाँ बाँधकर शहद की रोटियाँ खिलाई हैं। सवेरे होते ही राजा के सिपाही मेरे लिये रोटियाँ लायेंगे। मैं उन्हें खा नहीं पाती।"—दिलैला ने कहा।

"अरे नानी! काश यह मुसीबत मुझ पर जो आ पड़ती!"—परदेशी ने कहा।

"बेटा इसमें क्या रखा है! अगर तूने मुझे खोल दिया तो तुझे मैं अपनी जगह बाँध दूँगी। मेरी तरह तू भी मुँह पर परदा डाल ले। तुझे भी ये मलाई से चुपड़ी हुई शहद की रोटियाँ लाकर जबर्दस्ती खिलायेंगे।"—दिलैला ने कहा।

यह सुन, परदेशी ने उसकी रस्सियाँ खोल दीं। दिलैला ने उसको अपनी जगह बाँध दिया। चेहरे पर परदा डाल दिलैला उसी के घोड़े पर चढ़कर बग़दाद चली गई।

जब सवेरे, फ़रियादी उठे, तो वे यह जान कि दिलैला ही खम्भे पर बँधी है, गाली देने लगे। खम्भे पर बँधे व्यक्ति ने पूछा—"आखिर रोटियाँ क्यों नहीं आती हैं?" जब उन्होंने आँखें मलकर देखा, तो उन्हें पता लगा कि दिलैला उन्हें धोखा देकर फिर ग़ायब हो गई है।

थोड़ी देर में ख़ालिद वहाँ आया। उसने सब कुछ सुना। उसने सोचा कि यह उसके बस की बात न थी। वह सीधे खलीफ़ा के पास गया।

खलीफ़ा हसन अल रशीद ने सब की शिकायतें सुनीं। उसने यह भी वचन दिया कि जिन जिन को जो जो नुक़सान हुआ है, वह खुद पूरा कर देगा। परन्तु पहिले बुढ़िया को पकड़ना था। खलीफ़ा ने वह जिम्मेवारी ख़ालिद और मुस्तफ़ा को सौंपी।

ख़ालिद ने अर्ज़ किया कि यह काम उसके बस में न था। खलीफ़ा ने कहा—

"तब मुझे ऐसा आदमी बताओ, जो यह काम कर सकता हो।"

"जब से नये कोतवाल अहमद मुकर्रर हुए हैं, उन्होंने अभी तक किसी को नहीं पकड़ा है। इस बुढ़िया को वे ही पकड़ सकते हैं।"—खालिद ने कहा।

खलीफ़ा ने अहमद को बुलवाया, और उसको सारी कहानी सुनाकर, हुक्म दिया कि वह दिलैला को पकड़े। अहमद झट अपने चालीस सिपाहियों के साथ, दिलैला को ढूँढ़ने निकल पड़ा। उन सिपाहियों के सरदार का नाम था, गूनी अलि। उसने अपने सरदार अहमद से कहा—"हुज़ूर! मेरा यह ख्याल है कि इस मामले में, हसन साहब की मदद लेना अच्छा होगा।"

"अरे गूनि! हम और हमारी कोई मदद करे! हम कोई बुद्धुक हैं क्या! अगर फिर ऐसी बात मुँह से निकली तो ज़बान निकलवा दूँगा।"—अहमद ने इस तरह कहा कि हसन भी सुन ले।

हसन तो पहिले ही जल रहा था कि दिलैला को पकड़ने के लिए खलीफ़ा ने उसको मुकर्रर नहीं किया था। अब वह अहमद की बातें सुनकर, और भी खौल

उठा। उसने सोचा—"देखें मेरी मदद के बग़ैर ये कैसे दिलैला को पाते हैं!"

चालीस सिपाहियों को, राजमहल के बाहर खड़ाकर, अहमद ने कहा—"बहादुरो! मैं तुम्हें चार टोलियों में बाँट रहा हूँ। चारों टोलियाँ शहर के चारों मोहल्लों की छान-बीन करेंगी। कल दुपहर तक, हम, मुस्तफ़ा गलीवाली सराय में मिलेंगे। तब मैं खुद आकर तुमसे बातचीत करूँगा।"

चारों टोलियों के चले जाने के बाद, अहमद भी खुद ढूँढ़ने निकल पड़ा।

दिल्लैला यह जानकर ज़रा भी न डरी कि खलीफ़ा ने उसको पकड़ने के लिए अहमद को नियुक्त किया है। उसने अपनी लड़की से कहा—"बेटी! हसन के सिवाय मुझे और कोई नहीं पकड़ सकता। यह हमारी किस्मत अच्छी है कि खलीफ़ा ने हमें पकड़ने के लिए उसको नहीं कहा। अहमद को तो तुम भी आटे दाल का भाव बता सकती हो।"

"तो क्या मैं इन इकतालीस आदमियों को धोखा देकर आऊँ?"—जीनाब ने अपनी माँ से पूछा।

"हाँ, जाओ बेटी!"—दिल्लैला ने कहा। जीनाब ने अपने को खूब सजाया-सँवारा। बहुत ही महीन रेशमी ओढ़नी ओढ़कर, वह मुस्तफ़ा गलीवाली, हज करीम की सराय में गई। हज करीम के पास जाकर उसने कहा—"मेरे कुछ खास दोस्त आ रहे हैं। आप अपना बड़ा हॉल एक दिन किराये पर दीजिये। पाँच दीनार दूँगी।"

करीम ने कहा—"किराये वग़ैरह की कोई ज़रूरत नहीं है। यह काफ़ी है, अगर अतिथि मेरी शराब खरीदें।"

"उसमें कोई पीछे नहीं रहेगा। सब अच्छे पीनेवाले हैं।"—जीनाब ने कहा। वह अपने घर से कालीन, कुर्सी, चारपाई, बिस्तरें, बर्तन वगैरह सब ले आई। खाने-पीने की चीज़ें भी वहाँ रख, वह सराय के बाहर, पहरे पर खड़ी हो गई। थोड़ी देर बाद, गूनी अलि, नौ सिपाहियों के साथ, शान से वहाँ आया। जीनाब ने उसे देखकर पूछा—"क्या आप ही अहमद हैं!"

"नहीं तो, मुझे गूनी अलि कहते हैं।"—अलि ने कहा।

"अच्छा! आप सब आकर मेरा आतिथ्य स्वीकार कीजिये।" कहती हुई वह उनको हॉल में ले गई। वे सब के सब, शराब के पीपे के चारों ओर खड़े होकर शराब निगलने लगे। क्योंकि शराब में जीनाब ने भंग मिला दी थी, इसलिये उसके पीते ही, दसों आदमी, सुध-बुध खो, नीचे गिर गये। उनमें से एक एक को पैर से पकड़कर वह सहन में घसीट कर ले गई। उनका एक ढेर-सा लगाकर, एक कपड़ा डाल, हॉल को फिर पहिले जैसे साफ़ करवाकर, वह सराय के बाहर खड़ी हो गई।

थोड़ी देर बाद, अहमद के और दस सिपाही आये। ज़ीनाब उनको भी अन्दर ले गई। उन्हें उसने खूब खिलाया-पिलाया और जब वे बेहोश गिर गये, तो उनको भी सहन में घसीट दिया। जल्दी ही, चालीस सिपाहियों की यही हालत हुई।

आख़िर घोड़े पर सवार हो अहमद खुद आया। ज़ीनाब को सराय के बाहर खड़ा देख उसने उससे पूछा—"क्यों री लड़की! क्या तूने मेरे सिपाही देखे हैं?"

"क्या आप ही कोतवाल अहमद हैं? इस गली के सिरे पर, सुनते हैं कि आपके सिपाहियों को कोई बुढ़िया दिखाई दी। उन लोगों ने मुझसे यह कहने के लिये कहा है कि वे उसे पकड़ने गये हैं। आइये, आप इस बीच में मेरा आतिथ्य स्वीकार कीजिये।"—ज़ीनाब ने कहा।

अहमद ने खुशी खुशी पीना शुरु किया, पर भंग के असर से वह भी नशे में मूर्छित सा हो गया। ज़ीनाब ने उसके कपड़े उतार लिये। गहने भी ले लिये। उसने बाकी चालीस आदमियों के कपड़े भी ले लिये। कपड़ों को अहमद के घोड़े पर लाद वह घर चली गई।

अहमद और उसके चालीस सिपाही दो दिन और दो रात बीतने के बाद उठे। पहिले तो वे यह न जान सके कि वे कहाँ थे। पर जब थोड़ा बहुत मालूम होने लगा, तो वे जान गये कि किसी ने उनको खूब चकमा दिया है। वे शर्मिन्दा हुए। अहमद इस सोच में था कि बिना कपड़ों के बाहर गली में कैसे जाया जाय? बनियन और जँघिया पहिनकर, पहिले तो अहमद बाहर निकला, फिर उसके पीछे पीछे उसके चालीस आदमी। (अभी और है)

बुद्धू की होशियारी

★

एक दुकानदार ने बाहर जाते हुए अपने मुनीम से कहा—"मैं ज़रा बाहर जा रहा हूँ। दरवाज़ा देखते रहना, सम्भल कर।"

थोड़ी देर बाद मुनीम को मालूम हुआ कि शहर में कहीं, नृत्य-प्रदर्शन हो रहा था। उसने वहाँ जाकर नृत्य देखना चाहा। परन्तु मालिक ने कहा था—"दरवाज़ा देखते रहना" इसलिये उसने दुकान का दरवाज़ा खुदवाकर अलग किया, और उसको लेकर नृत्य देखने गया।

जब दुकानदार वापिस आया तो दुकान लुटी गई-सी लगती थी। दुकान का दरवाज़ा भी न था। जब मुनीम दरवाज़ा लेकर, बाद में मुस्कराता भागता आया, तब वह उसकी 'होशियारी' समझ गया।

मेहनत का मूल्य

किसी देश में एक ग़रीब ब्राह्मण रहा करता था। उसके पास सिवाय एक छोटे से घर, और उसके साथ लगे छोटे-से सहन के, कुछ न था। इसलिये रोज़ वह घूम-फिरकर भिक्षा माँगा करता। जब उसको, अपने और पत्नी के भोजन के लायक चावल मिलते, तो वह घर चला आता। पत्नी उन चावलों को पकाती। अगर घर के सहन में कोई शाक-सब्जी लगी होती, तो उसे बनाकर वे खाते-पीते।

ब्राह्मण बूढ़ा हो गया। भीख माँगने भी न जाता था। तब उसकी पत्नी ने एक दिन कहा—

"आप कभी भी कल के बारे में सोचने की ग़ल्ती नहीं करते। अगर हम पहिले से ही बुढ़ापे के बारे में होशियार हो जाते, तो आज हमारी यह गति न होती। सुनते हैं, राजा दानी हैं। आप माँगे तो वे हमारी ग़रीबी दूर कर देंगे।"

ब्राह्मण, पत्नी की सलाह पर राजा के पास जाकर, आशीर्वचन पढ़ने लगा। राजा ने पूछा—"क्या चाहिये, माँगो।"

"महाराज! आप धनी-सम्पन्न हैं, पर मैं आपकी सम्पत्ति का कोई भाग नहीं माँगता। अगर अपनी मेहनत से कुछ कमाया-धमाया हो, तो उस में से थोड़ी बहुत भिक्षा दीजिये।"—ब्राह्मण ने कहा।

राजा के पास बहुत सम्पत्ति थी, पर उस में से एक दमड़ी भी ऐसी न थी, जो उसने स्वयं कमाई थी। अगर वह ब्राह्मण को कुछ देना चाहता तो उसके लिये उसे पैसा कमाना था। राजा ने थोड़ी देर तक सोचकर ब्राह्मण से कहा—"अच्छा, तो कल शाम को आना।"

श्री किशोर कुमार खंडेलवाल

ब्राह्मण घर चला गया। अगले दिन सबेरे, राजा मैले कपड़े पहिन कर, कुली का काम करने निकल पड़ा। वह थोड़ी दूर ही गया था कि उसको गली में कुम्हार घड़े बनाता दिखाई दिया।

"क्यों भाई! मुझे कोई काम दे सकोगे?"—राजा ने कुम्हार से पूछा।

"अच्छा तो, तू मिट्टी मिला। शाम तक अगर तूने काम किया तो तुझे चार कसोरे दूँगा।"—कुम्हार ने कहा।

राजा मान गया। परन्तु वह काम ठीक तरह न कर सका। मिट्टी मिलाते मिलाते, वह बहुत थक गया। कुम्हार ने यह सब देखते हुए कहा—"भला, यह काम तू क्या कर सकेगा! जा बे, जा! वचन दिया था, इसलिये ले जा ये कसोरे। फिर कभी मज़दूरी के लिये न आना।" राजा को डाँट-डपटकर, कुम्हार ने चलता किया।

ब्राह्मण अगले दिन शाम को दरबार में पहुँचा। राजा ने उसके हाथ में चार कसोरे रखते हुए कहा—"यह ही मेरी मेहनत का फल है।" "ये ही मेरे लिये दस हज़ार हैं महाराज!" ब्राह्मण, राजा को आशीर्वाद देकर घर चला गया।

ब्राह्मण की पत्नी इस प्रतीक्षा में थी कि उसका पति, राजा के पास से गाड़ियों पर दान लादकर ला रहा होगा। पर उसको खाली हाथ आता देख उसने पूछा—"क्यों! क्या हुआ?"

"मैं उनका दान ले आया हूँ। यह लो चार कसोरे।" ब्राह्मण ने उन्हें पत्नी के हाथ में रख दिये।

उनको देखते ही, ब्राह्मण की पत्नी गरज उठी—"यह तो हीरों की खान से पत्थर लानेवाली बात हुई। राजा के पास से क्या इन्हें ही लाया जाता है?"

उसकी पत्नी ने चारों कसोरे उसके देखते देखते सहन में फेंक दिये।

तब अन्धेरा हो चुका था। ब्राह्मण ने उनको सवेरे खोजने की सोची। सवेरे उसने बहुत खोजा, पर वे कसोरे न मिले। परन्तु चार विचित्र पौधे ज़रूर उसको दिखाई दिये।

देखते देखते वे चारों पौधे बड़े होने लगे, फलने-फूलने भी लगे। जब ब्राह्मण की पत्नी ने उन्हें शाक के लिये काटा, तो उनमें मोतियाँ भरी हुई थीं। ग़रीब ब्राह्मण अपनी आँखों पर विश्वास न कर सके। जब उन्होंने मोतियों को ले जाकर सुनार और जौहरियों को दिखाया तो उन्होंने कहा कि वे क़ीमती थे।

इतने दिनों बाद, उस ब्राह्मण परिवार की ग़रीबी दूर हुई। चारों पौधे, कल्पवृक्ष की तरह रोज़ फल देते, और ब्राह्मण उन्हें हर किसी को दान दे देते।

थोड़े दिनों बाद, राजा को इस ब्राह्मण के बारे में मालूम हुआ। राजा यह नहीं सोच पा रहा था कि वह ब्राह्मण, जिसने उसके पास से चार कसोरे ही पाये थे, कैसे यकायक इतना धनी हो गया! यह जानने के लिये वह ब्राह्मण के घर गया।

"महाराज! आपने मुझे जो चार कसोरे दिये थे, मैंने उन्हें खर्चा नहीं। मैंने अपनी पत्नी को दिया, तो उसने उन्हें आँगन में फेंक दिया। अगले दिन सवेरे वे ढूँढ़े भी न मिले, पर वहाँ विचित्र वृक्ष दिखाई दिये। उनके कारण हमारा दारिद्रय दूर हो गया।"—ब्राह्मण ने बताया।

मेहनत का मूल्य क्या होता है, राजा जान गया। राजा ने उसके दूसरे ही दिन यह आज्ञा निकाली कि राज्य में सब मेहनत करके ही अपनी रोज़गारी करें। वह भी स्वयं मेहनत करने लगा।

चन्दामामा

[श्री दुर्गा प्रसाद "शाद" लखनऊ.]

कितने अच्छे चन्दामामा, कहते बच्चे चन्दामामा !!
रोज़ शाम को आ जाते हो, दुनिया पर छा जाते हो ।
रहते हो क्यों इतनी दूर, बोलो तो क्यों हो मजबूर ?
हम बच्चे करते हैं प्यार, तुम पर करते जान निसार ।
दिन भर आखिर क्या करते हो, सूरज से तुम क्यों डरते हो !
तुम भी क्या स्कूल हो जाते, चार बजे हो वापस आते ?
तुम भी क्या खाते हो मार, डंडा देखके आता बुखार ?
तुम्हें मिले हैं टीचर कैसे, अच्छे हैं या मेरे जैसे !
अगर हमारे होते दो पर, पास तुम्हारे आते उड़कर
मीठी मीठी बातें होतीं, प्यारी प्यारी बातें होतीं ।
कुछ तो बताओ अपना हाल, तुम तो बने हो एक सवाल
हरदम क्यों रहते खामोश, यों खो बैठे हो तुम होश ।
जान गया मैं दिल की बात, यों फीकी फीकी है रात,
तुम्हें चाँदनी से है प्यार, वही तुम्हारी जाने बहार ।
रूठ गयी है तुम से आज, इसीलिये गुम-सुम से आज !

अच्छा चन्दामामा टा टा !
एक बार अब हँस दो हा हा !!

बताओगे ?

१. इंग्लैंड का प्रधान मन्त्री कौन है ?

२. विन्ध्य प्रदेश के कौन राज्यपाल नियुक्त हुए हैं ?

३. संसार का कौन-सा सबसे गहरा समुद्र है ?

४. "दुनियां की छत" कहाँ समझी जाती है ?

५. सबसे बड़ा रेगिस्तान कहां है ?

६. ऐसा देश बताओ, जहाँ आधी रात में भी सूर्य दिखाई देता हो ?

७. सब से पहिले इस संसार में कौन पैदा हुए ? जलचर या भूचर ?

८. क्या भारत की द्वितीय पंच वर्षीय योजना बनायी गई है ? उसके कितने भाग हैं ?

९. उत्तर प्रदेश की आबादी कितनी है ?

१०. डाक विभाग, केन्द्रीय सरकार का महकमा है, या प्रान्तीय सरकार का ?

पिछले महीने के 'बताओगे' के प्रश्नों के उत्तर :

१. नागार्जुन सागर ।

२. नहीं ।

३. अफ़्रीका महाद्वीप में, स्वतन्त्र ।

४. अलीगढ़, विश्वभारती, और उस्मानिया ।

५. मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ।

६. महादेवी वर्मा ।

७. मद्रास में, श्री देवी प्रसद राय चौधरी ।

८. नागरी ।

९. कोई नहीं ।

१०. बुद्ध गया बिहार प्रान्त में है । यहाँ बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था, यह धार्मिक पुण्य-क्षेत्र है ।

हमारी भूमि — ३

★

भूमि का ग़ौर से अध्ययन करें तो कई विचित्र बातें मालूम होंगी। भूमि के उत्तर ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव हैं और इनके बीचोंबीच भूमध्य रेखा है। भूमध्य रेखा के उत्तरीय भाग को उत्तरीय गोलार्ध कहते हैं, और दक्षिणी भाग को, दक्षिणी गोलार्ध कहते हैं। इन दोनों भागों को देखने से, ये बातें सबसे अधिक हमारा ध्यान आकर्षित करती हैं। भूमि का अधिक भाग उत्तरीय गोलार्ध में है, और जल का अधिक हिस्सा दक्षिणीय गोलार्ध में है। उत्तर ध्रुव में भूमि उतनी नहीं है, पर दक्षिणी ध्रुव में, बर्फ़ के नीचे ज़मीन है।

इसके अलावा एक और विचित्र बात है। अगर हम एक ध्रुव को, फ्रान्स के ब्रिटेनी में मानें, और दूसरा, न्यूज़ीलैंड में, तो हम देखेंगे कि भूमि का ८० प्रतिशत हिस्सा एक गोलार्ध में है, और ९० प्रतिशत से अधिक जल दूसरे हिस्से में है।

भूमि, जब द्रव रूप से ठोस बन रही थी, तब उस पर पत्थर की हल्की एक परत जमा हुई होगी, अब वह भूमि पर ही दिखाई देती है, जल में नहीं। इसका स्पष्ट कारण अभी तक कोई नहीं बता पा रहा है। चन्द्रमा, जब पृथ्वी से निकला, तो वह पत्थर की हल्की परत उसी के साथ चली गई, ऐसा कुछ विशेषज्ञों का कहना है। उनका विश्वास है कि जहाँ आज प्रशान्त महासागर है, वहीं से चन्द्रमा बना है।

हमारे पुराणों के अनुसार—देवताओं ने जब क्षीर सागर का मथन किया तो पहिले हालाहल निकला ; बाद में अमृत, लक्ष्मी, और चन्द पैदा हुए। अगर प्रशान्त महासागर को ही क्षीर सागर मान लिया जाये, तो चन्द्रमा के पैदा होने के लिए, भूमि में से न जाने कितना लावा, और ज्वालाएँ निकली होंगी। उसी का हमारे पूर्वजों ने "हालाहल" के रूप में वर्णन किया था।

आदिम जन्तु

"इयोहिपस" नाम का एक जन्तु हुआ करता था। वह लोमड़ी जितना होता था। उसके गले पर, कुछ कड़े बाल हुआ करते थे। छोटी पूँछ, छोटा गला, मुलायम पत्तों को काटने लायक दान्त, दल्दली भूमि पर चलने के लिए पैर—अगले पांव में चार अँगुल्यिाँ होती थीं, और पिछले पैर में तीन।

भूमि का रूप-रंग बदला। दल्दली भूमि सख़्त हुई। उस पर बड़े बड़े वृक्ष पैदा हुए। "इयोहिपस" भी बदल्कर "मेसोहिपस" हो गया। अब वह एक बड़े कुत्ते के बराबर हो गया। अब उसके पाँवों में, तीन अँगुल्यिाँ मात्र रह गई ;- उन में से बीच की अँगुली, बाकी अँगुल्यिों से बड़ी थी। उन पर नाखून भी थे। यानी, वह शनैः शनैः बदल रहा था।

भूमि पर और परिवर्तन हुए। बड़े बड़े जंगल गायब हो गये और उनकी जगह, बड़े बड़े चरागाह बने। "मेसोहिपस" भी बदल्कर "प्रोटोहिपस" हो गया। उसके दान्त, अब कड़ी से कड़ी घास काट सकते थे। उसकी ऊँचाई बढ़ गई। वह अब खूब भाग-दौड़ सकती थी। ऊँचाई के बढ़ने का कारण यह था कि वह अब पाँव की एक ही अँगुली पर चला करता था। बाकी दोनों अँगुल्यिाँ ज़मीन को छूती भी न थीं। वह जन्तु बदलते बदलते, आजकल के घोड़े के समान हो गया।

हाथी भी कुछ ऐसे परिवर्तनों में से गुज़रा था। आजकल के हाथियों के पूर्वज, पाँच करोड़ वर्ष पहिले, सूअर जितने होते थे। उनके ऊपरले जबड़ों में, दो बड़े दान्त होते थे, शरीर के साथ दान्त भी क्रमशः बढ़ते गये।

१० लाख वर्ष पहिले, जब भूमि हिम से ढँकी हुई थी, हाथी के पूर्वज दो प्रकार के थे। एक तो केशोंवाला हाथी था और दूसरे ऐरावत था। प्रस्तर युग के मनुष्य ने, न केवल बाल्वाले हाथियों का शिकार ही किया था, बल्कि उनके चित्र भी अपनी गुफ़ाओं के पत्थरों पर बनाये थे।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

जून १९५६ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें ।

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए । परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों । परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिख कर निम्नलिखित पते पर ता. १०, अप्रैल के अन्दर भेजनी चाहिये ।

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन
वडपलनी :: मद्रास - २६

अप्रैल – प्रतियोगिता – फल

अप्रैल के फ़ोटो के लिये निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं ।

इनके प्रेषक को १० रु. का पुरस्कार मिलेगा ।

पहिला फ़ोटो : 'प्यास बुझाओ !' दूसरा फ़ोटो : 'दीप जलाओ !!'

प्रेषक : श्री वामन विनायक नाबर, सारस्वत कालोनी, डोंबिवलि (ज़िला) थाना.

अदृश्य महिला

एक स्त्री को गुम कर देना, एक बहुत ही आकर्षक जादू है। यह पहिले पहल यूरोप में दिखाया गया और अमेरीका के प्रसिद्ध जादूगर, हेरमन दी ग्रेट, ने इसको अपने उत्तम प्रस्तुतीकरण से और भी प्रसिद्ध कर दिया।

रंगमच पर एक कुर्सी रख दी जाती है। इसके नीचे एक मामूली अख़बार का पन्ना फैला दिया जाता है। तब एक महिला को (जादूगर की सहायिका) कुर्सी पर बैठने के लिए कहा जाता है। तब जादूगर एक बहुत बड़ी सफ़ेद चादर से उसे ढँक देता है। फिर जादूगर "एक, दो, तीन" कहकर चादर हटा देता है। ख़ाली कुर्सी, और अख़बार का पन्ना तो दिखाई देता है, पर महिला नहीं दिखाई देती। यह देखकर सब अचरज में पड़ जाते हैं।

यह जादू करने से पहिले, जादूगर को रंगमंच ठीक कर लेना चाहिये। रंगमंच पर एक ऐसा गुप्त छेद होना चाहिये, जिसके द्वारा महिला आसानी से जा सके। एक लकड़ी का ढकना उस पर रख दिया जाता है, जो नीचे की ओर खुलता है। एक सहायक, रंगमंच के नीचे का ढकना हटा देता है, और महिला, कुर्सी पर से ग़ायब हो जाती है। कुर्सी भी ख़ास तौर से बनाई जाती है। बैठने का हिस्सा, (जैसा कि चित्र में दिखाया गया है) नीचे की ओर गिराया जा सकता है। कुर्सी के पिछले हिस्से में, एक तार लगा हुआ होता है, जिसको आगे-पीछे

किया जा सकता है। जब इसको आगे किया जाता है, तो यह महिला के सिर पर गिरता है। जब महिला के सिर पर चादर ओढ़ी जाती है, तब वस्तुतः वह इस तार पर ही गिरती है और ऐसा लगता है, जैसे कोई महिला

में, बिना किसी के देखे रंगमंच के पीछे चली जाती है, अथवा हाल में आ जाती है, ताकि जादूगर के बुलाने पर, वह फिर रंगमंच पर उपस्थित हो सके। इस जादू का कई बार रंगमंच पर अभ्यास करना चाहिये, जिससे कि कोई कमी
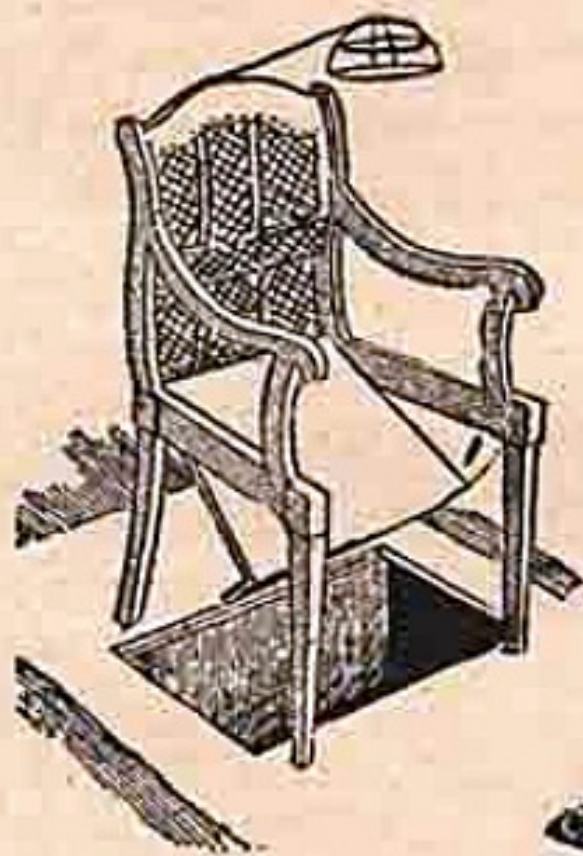
कुर्सी पर बैठी हुई हो। जब जादूगर चादर हटाता है, तो वह पिछली तरफ़ ले जाता है, और इस तरह तार भी कुर्सी के पिछले हिस्से की ओर चली जाती है, और प्रेक्षक तार को, आगे से देख नहीं पाते। महिला इस बीच

न रह जाये। नहीं तो प्रेक्षक सब समझ लेंगे, और जादूगर मुश्किल में पड़ जायेगा। इस प्रकार के जादुओं के लिये यह बहुत आवश्यक है कि उनके यहाँ अच्छे सहायक हों, और जादू का बार बार अभ्यास भी किया जाय।

रंगीन चित्र-कथा

एक दिन का राजा—२

अबू को उठा जान, बड़े वज़ीर जाफ़र ने उसको सलाम करके कहा—"अब बादशाह को उठना चाहिये, सवेरे की नमाज़ का वक्त हो गया है।"

अबू को कुछ न समझ में आया। कहीं यह आँखों का भ्रम तो नहीं है, यह सोचते हुये वह आँखें मलने लगा और चारों तरफ़ देखने लगा। परन्तु दृस्य न बदला। कहीं स्वप्न तो नहीं

है, यह सोच, फिर उसने अपने हाथ पर चूँटी काटी।

अबू घबराने लगा। वह करवट बदलकर फिर सो गया। वह थोड़ी देर सोया और फिर उठ बैठा। जब आँखें खोलीं, तो तब भी वही दृस्य था और पहले की तरह वज़ीर वहीं खड़ा था।

खलीफ़ा के वेषधर मसरूर ने आकर कहा—"नमाज़ का वक्त हो चुका है, अब दरबार में जाने का वक्त हो रहा है।"

अबू ने झुँझलाते हुए पूछा—"सच सच बता, तू कौन है, और मैं कौन हूँ? जल्दी बता!"

"आप खलीफ़ा हरून अल रशीद हैं। आप ग़रीबों पर रहम करनेवाले रहम-दिल बादशाह हैं; हमारे माल-मिलकियतों के मालिक हैं और मैं आपका तावेदार मसरूर हूँ!"—मसरूर ने सविनय कहा।

"झूठ है, सरासर झूठ है। मैं यकीन नहीं कर सकता।" कहते हुए अबू ने एक गुलाम को बुलाया। "क्या तुम जानते हो, मैं कौन हूँ।"

"आप हमारे मालिक खलीफ़ा हरून अल रशीद हैं।"

अबू अल हसन, बिस्तर पर लेटे ही, पैर इधर उधर पटक पटकर हँसने

लगा। जब उसका हँसना कम हुआ तो नौकरानियों ने आकर उसको खलीफ़ा की पोशाक पहिनाई।

नित्य-कृत्य पूरे करके, अबू नौकर-चाकरों के साथ दरबार में गया। वह मन में अपने आप पर आश्चर्य कर रहा था कि मैं अबू अल हसन न होकर कैसे खलीफ़ा हरून अल रशीद हो गया! परन्तु वह अपना सन्देह पूरा न कर सका और बहुत देर तक सोचता रहा।

अबू सिंहासन पर बैठा। बड़े वज़ीर ने उसके सामने कुछ कागज़ात लाकर रखे। अबू ने उनको पढ़कर ठीक निश्चय ही किये। खलीफ़ा भी छुपा छुपा उसकी अक्लमन्दी की तारीफ़ करने लगा।

इसके बाद कोतवाल अहमद ने आगे बढ़कर, सलाम करके पूछा—"अब आपका क्या हुक्म है?"

अबू ने इस प्रकार कहा :

"फ़लाने मोहल्ले का, फ़लाना सरदार है। वह फ़लानी गली में, फ़लाने घर में रहता है। उसके दो वाहियात साथी हैं। तुम दस सिपाहियों को साथ ले जाकर, उन तीनों को पकड़कर, एक एक को चार चार सौ कोड़े लगवाओ। फ़िर उनके मुँह पर कालिख पोतकर गधों पर, दुम की ओर मुँह करके बिठाओ, और उन्हें शहर में, ज़ोर ज़ोर से यह चिल्लाते हुए घुमाओ—"स्त्रियों की आबरू खराब करनेवालों को यह ही सज़ा मिलती है। जो भले मानसों की निन्दा करते हैं, उनकी हालत यह ही होती है।" इसके बाद, सबके सामने, उन तीनों को फाँसी पर चढ़ा दो।"

अहमद को पहिले ही बता दिया गया था कि खलीफ़ा, एक रोज़ में जो कोई हुक्म दें, उसकी पूरी तरह तामील की जाय। इसलिये दस सिपाहियों को लेकर, वह तुरन्त निकल पड़ा।

भारत सरकार ने राष्ट्र-पिता महात्मा गांधीजी के सारे लेखों, भाषणों और पत्रों का एक संस्करण प्रकाशित करने का निश्चय किया है। इस कार्य के लिए भारत सरकार ने 'नव जीवन ट्रस्ट' के साथ, जिसे गांधीजी ने अपने विचारों के प्रकाशन का काम सौंपा था, एक समझौता किया है।

* * *

भारत के शिक्षा मंत्री श्री मौलाना अबुल कलाम आज़ाद अगले जुलाई मास में सोवियत संघ का भ्रमण करेंगे। सोवियत संघ के शिक्षा मंत्री श्री इवान कैरोव के निमन्त्रण पर आप वहाँ जानेवाले हैं। सोवियत संघ का एक गण तंत्र, उज़बेक का भी ये दौरा करेंगे।

* * *

यह सुनने में आया कि आन्ध्र राज्य में श्री विनोबा जी की तीन मास की पद-यात्रा में उन्हें करीब १,४२० गांवों में रहनेवाले १,२०० व्यक्तियों ने ५१,००० एकड़ की भूमि दान में दे दी है। भूमि के अतिरिक्त ३०—३५ हज़ार रूपये की क़ीमत के दो मकान भी उन्हें दान के रूप में मिले।

* * *

समाचार पत्रों से मालूम होता है कि भारत के ५ लाख साधुओं ने भारत
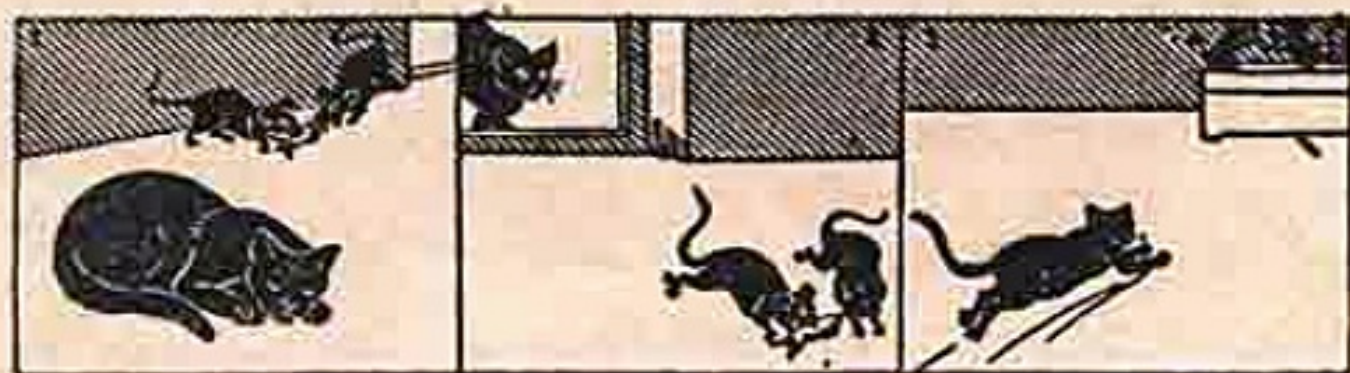
सरकार की द्वितीय पंच वर्षीय योजना को सफल बनाने में अपनी शक्ति का उपयोग करने का निश्चय किया है।

* * *

भारत सरकार की तरफ़ से सारनाथ जानेवाली सड़कें सुधारने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार को ४ लाख ३६ हज़ार रुपये का अतिरिक्त अनुदान दिया जा चुका है। यह प्रबन्ध २५०० वीं बुद्ध-जयन्ती के समारोह के लिए किया जा रहा है, जो मई में वहां होनेवाला है।

* * *

यह पढ़ने में आया कि युगोस्लाविया में प्राइमरी स्कूल से लेकर विश्व विद्यालय तक की शिक्षा निःशुल्क है और स्कूल-कालेजों में सभी लड़के-लड़कियाँ, बिना किसी जाति, धर्म और नागरिकता के भेद-भाव दिखाये, भर्ती कर लिये जाते हैं। सभी स्कूलों में मातृभाषा के माध्यम से ही शिक्षा दी जाती है और पढ़ाई में कोई धार्मिक बन्धन भी नहीं हैं।

* * *

समाचार पत्रों से मालूम हुआ कि तुर्कमेन विज्ञान अकादमी के सदस्य प्रो. स्मिर्नोव ने 'भगवद्गीता' का रूसी अनुवाद पूरा कर लिया है। भगवद् गीता का अनुवाद सीधे संस्कृत से रूसी में करने का यह प्रथम प्रयत्न है। यह रूसी अनुवाद अकादमी के प्रकाशकों की तरफ़ से इसी वर्ष प्रकाशित होगा।

* * *

भारत के संविधान की अंग्रेजी प्रतियाँ अब बिक्री के लिए उपलब्ध हैं। उसमें संविधान सभा के सभी सदस्यों के हस्ताक्षर भी हैं। संविधान के पृष्ठों को, शान्ति निकेतन के सुविख्यात चित्रकार श्री नन्दलाल बोस ने अपनी सुन्दर ऐतिहासिक कलाकृतियों से सजाया है।

चित्र - कथा

छुट्टी के एक दिन दास और वास अपने दोस्तों के साथ दो गेंद लेकर खेलने गये। उनके साथ 'टाइगर' भी था ! पहले पहल वास ने अपने मुँह में एक लकड़ी रखकर उसके छोर में गेंद खड़ा कर दिया। फिर दास ने भी लकड़ी को अपने नाक पर खड़ाकर उसके अन्त में गेंद बैठा दिया। दोस्तों ने यह बेलेन्स का खेल देखकर तालियाँ बजायीं। 'टाइगर' भी कुछ देर तक यह सब देखता रहा और जब वह दास के पास दौड़ते हुए गया तो उसने उसके नाक पर लकड़ी रखकर दोनों छोरों में दो गेंदें खड़ाकर दिये। 'टाइगर' सरकस वाले कुत्ते की तरह बड़ी चालाकी से दोनों गेंदों को संभाला। सब के सब यह देखकर बहुत चकित हो गये।

Printed by B. NAGI REDDI at the B. N. K. Press Ltd., Madras 26, and Published by him for Chandamama Publications, Madras 26. Controlling Editor: SRI 'CHAKRAPANI'

Photo by B. Bhansali
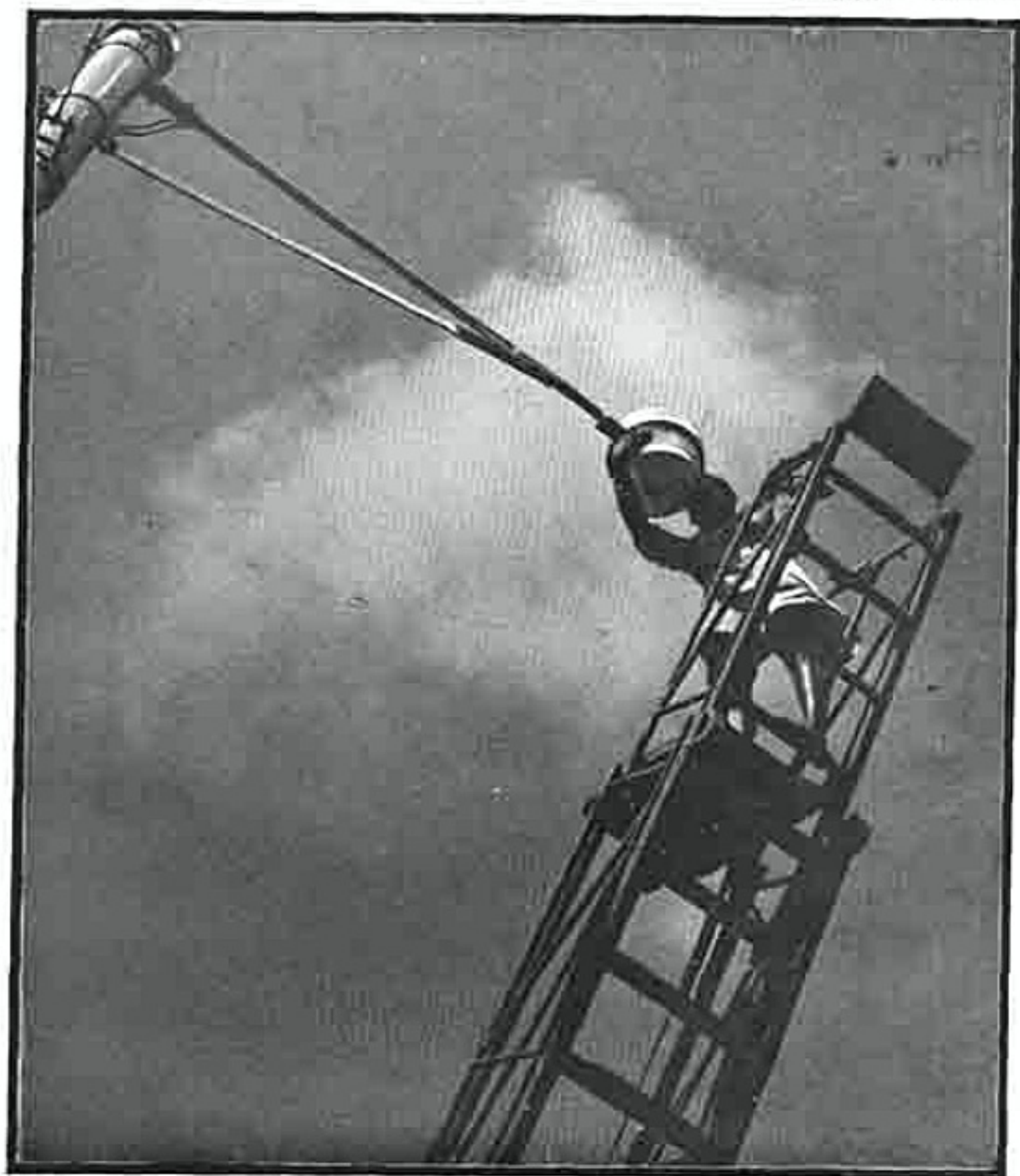
पुरस्कृत परिचयोक्ति

दीप जलाओ !!

प्रेषक :
वामन वि. नाचर, डोंबिवली

CHANDAMAMA (Hindi) APRIL 1956 Regd. No. M. 5452

रंगीन चित्र-कथा चित्र — ३